परमपिता शिव परमात्मा
गीता-ज्ञान-दाता

(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 51, अंक 12, जून, 2016
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती जिन्होंने 24 जून 1965 को सम्पूर्णता प्राप्त की

1.उज्जैन- कुम्भमेले में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित चैतन्य देवियों की झांकी का अवलोकन करते हुए निवर्तमान शंकराचार्य भ्राता सत्यमित्रानन्द गिरि जी। साथ में हैं ब्र.कु.उषा बहन तथा ब्र.कु.उर्मिला बहन। **2.उज्जैन-** कुम्भ मेले में आयोजित चैतन्य देवियों की झांकी के पण्डाल का उद्घाटन करते हुए श्री अखण्ड आश्रम उत्तरकाशी की महामण्डलेश्वरी साध्वी सुश्री रंजनादेवी, ब्र.कु.उषा बहन तथा अन्य। **3.इन्दौर (विन्ध्याचल नगर)-** नवनिर्मित 'ज्ञानदीप भवन' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी। साथ में ब्र.कु.कमला बहन, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई तथा अन्य। **4.उज्जैन-** कुम्भ मेले में ग्लोबल इन्टरफेथ वाश अलिएन्स भारत तथा यूनिसेफ के द्वारा आयोजित 'सर्व धर्म स्वच्छता संकल्प' कार्यक्रम में विभिन्न धर्मनेताओं के साथ ब्र.कु.बिन्नी बहन। **5.पुखराया-** 'बेटी बचाओ, सशक्त बनाओ' अभियान कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बिहार के राज्यपाल महामहिम भ्राता रामनाथ कोविंद, बहन सविता कोविंद, ब्र.कु.विद्या बहन तथा अन्य। **6.बैंकाक(थाईलैण्ड)-** 'माइंड मैनेजमेंट' विषय पर व्याख्यान देने के बाद ब्र.कु.उर्मिला बहन तथा श्रोतागण ईश्वरीय स्मृति में। **7.नीमच-** जिलाधीश भ्राता रजनीश श्रीवास्तव को ईश्वरीय सौगात देते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी। साथ में हैं ब्र.कु.सुरेन्द्र भाई। **8.नवाबगंज (गोण्डा)-** उ.प्र.के कृषि मन्त्री भ्राता विनोदकुमार सिंह, ब्र.कु.सुरेन्द्र बहन, एस.डी.एम.भ्राता जगदीश सिंह तथा अन्य, कृषक जागरूकता सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए।

संजय की कलम से

मातेश्वरी ब्रह्माकुमारी सरस्वती जी

जून 1964 को मातेश्वरी ब्रह्माकुमारी सरस्वती जी ने अपनी पार्थिव देह का परित्याग किया था। यूं तो देह में मोह-ममता उनको पहले से ही नहीं थी। वे 'नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा' की स्थिति में ही थीं। उन्होंने देह ईश्वरीय सेवा में समर्पित की हुई थी और वे किसी कोरे स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि सर्वजन-हित ही के लिए इसे प्रयुक्त करती थी। उन्हें न मृत्यु का भय था, न यहाँ से जाने का अफसोस। वे किसी अपूर्ण इच्छा से ग्रसित नहीं थीं बल्कि उपराम थीं। उनका शरीर उनकी कड़ी परीक्षा ले रहा था परन्तु फिर भी वे अपना मानसिक सन्तुलन बनाए हुए थीं। 'मैं कौन हूँ, कहाँ से आई हूँ, कहाँ मुझे जाना है?' ये स्मृति और वैसी ही स्थिति स्पष्ट रूप से उनके मन में बनी हुई थी, इससे वे विचलित नहीं हुईं।

रोग विकराल, आत्म-नियन्त्रण बा-कमाल

शरीर छोड़ने से पहले भी उन्होंने मधुबन में उपस्थित सभी ब्रह्मा-वत्सों को अपने कमल हस्तों से फल रूपी प्रसाद दिया और योग-स्थिर नयनों से मुलाकात भी की। उसी मुलाकात में विदाई भी समाई हुई थी। मूक भाषा में और अपने प्रकाशमान मुख-मंडल से उन्होंने हरेक से जो कहना था सो कह दिया। यद्यपि शरीर तूफान ला रहा था तो भी वे सबके सामने ऐसी स्थिर थीं कि उनके चेहरे से शान्ति बरस रही थी। किसी को यदि यह देखना हो कि योगी का मन अपने तन पर कैसे विजय प्राप्त करता है अथवा उसकी समाधि, व्याधि को कैसे पराजित करती है तो यह दृश्य उसके लिए एक प्रत्यक्ष उदाहरण का काम कर सकता था। रोग भले ही विकराल था परन्तु मातेश्वरी जी का आत्म-नियन्त्रण उससे कहीं अधिक बेमिसाल और बा-कमाल था। शरीर की अवस्था तो शायद कष्ट उत्पन्न कर ही रही थी परन्तु आत्मा उससे ऊपर उठकर अथवा पीछे धकेलकर अपने गन्तव्य की ओर जाने को उद्यत थी।

जीवन-काल में मन-वचन-कर्म की एकता

प्राय: कहा जाता है कि व्यक्ति के द्वारा किये हुए नकारात्मक कर्म अन्तिम घड़ी में उसके सामने आते हैं। यदि इस कहावत को ध्यान में रख कर मातेश्वरी जी की स्थिति पर विचार किया जाए तो मालूम होता था कि उनका मन निर्विघ्न था क्योंकि उनके मुख से कोई भी दुख-सूचक अथवा पश्चाताप-बोधक शब्द नहीं निकल रहा था बल्कि कुछ ही दिनों पूर्व उन्होंने अपनी वाणियों में यह जो कहा था कि यदि शरीर को व्याधि होती भी है तो

अमृत सूची

- योगेश्वरी माँ सरस्वती *(सम्पादकीय)* 7
- मम्मा की विशेषताएँ 9
- राजयोग से तनाव मुक्ति 11
- श्रद्धांजलि 12
- मानव जीवन में धन 13
- ब्रह्मा की भूमि थाइलैंड 15
- राजयोग के प्रयोग..............19
- ए खुदा दोस्त *(कविता)* 21
- सुखी गृहस्थ जीवन............22
- पुरानी बुरी आदत से छुड़ाया ...23
- एक कदम राजयोग की ओर ..24
- विकारों के सूक्ष्म अंश 26
- योगबल अर्थात् परमात्मा पिता से प्राप्त शक्तियों का प्रवाह 27
- मृत्यु से निर्भय बनें 28
- बैज ने बचाया बदमाशों से 29
- सचित्र सेवा समाचार...........30
- भारत के प्राचीन ग्रंथों में 32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

मन और बुद्धि को उसके प्रभाव से मुक्त रहना चाहिए, उस कथन के अनुरूप ही अब उनकी स्थिति थी। उनके जीवन काल में उनके मन-वचन-कर्म में एकता थी और अन्त समय भी उनकी स्थिति उन द्वारा कथित वाक्यानुसार ही थी।

धीर और गम्भीर

जो ब्रह्मा-वत्स उनसे उस दिन मिले थे, प्राय: उनको भी यह आभास था कि शायद यह शरीर अधिक समय तक नहीं चल पाएगा। परन्तु इसके बावजूद भी मातेश्वरी जी की स्थिति देहातीत अथवा विदेही थी। यह जानते हुए भी कि अब समय थोड़ा है, उन्होंने न तो मुख से किसी को ऐसा शब्द कहा, न ही ऐसा इशारा दिया कि जिससे वातावरण की अलौकिकता में कुछ अन्तर आए। वे सदा की तरह गम्भीर और धीर बनी हुई थीं। उनका श्वास लेना भारी मालूम हो रहा था, उन्होंने अपना दायां हाथ पिताश्री जी के दायें हाथ में दिया हुआ था और पिताश्री जी उन्हें योग की शक्तिशाली दृष्टि दे रहे थे, कुछ समय तक यही दृश्य बना हुआ था। लगता था कि उस शरीर से विदा लेने से पहले वे अपने श्रद्धेय पितामह और परमपिता से आखिरी मुलाकात कर रही हैं। एक ओर वे शरीर को छोड़ती जा रही थीं और दूसरी ओर योगस्थ और स्वरूपस्थ होकर अलौकिक रीति से विदा ले रही थीं। वह दृष्टि और हाथ उनके लिए सूक्ष्म विमान का कार्य कर रहे थे। शायद मूक भाषा में वे कह रही थीं कि मैं अब जा रही हूँ, मैं जा रही हूँ आगे तैयारी करने के लिए। अच्छा फिर मिलेंगे।

पिताश्री से आगे प्रस्थान

दोनों एक-दूसरे का हाथ नहीं छोड़ रहे थे और साथ भी नहीं छोड़ रहे थे परन्तु जब शरीर ही छूट गया तो पार्थिव हाथ भी हाथ से छूट गया परन्तु आत्मिक नाते से हाथ और साथ नहीं छूटा। अपने अलौकिक जीवन में भी वे किसी नगर में बाबा के जाने से पहले स्वयं जाकर क्लास को निश्चययुक्त और धारणावान बनाने की सेवा किया करती थीं। अब भी उसी प्रीति की रीति अथवा सेवा के विधि-

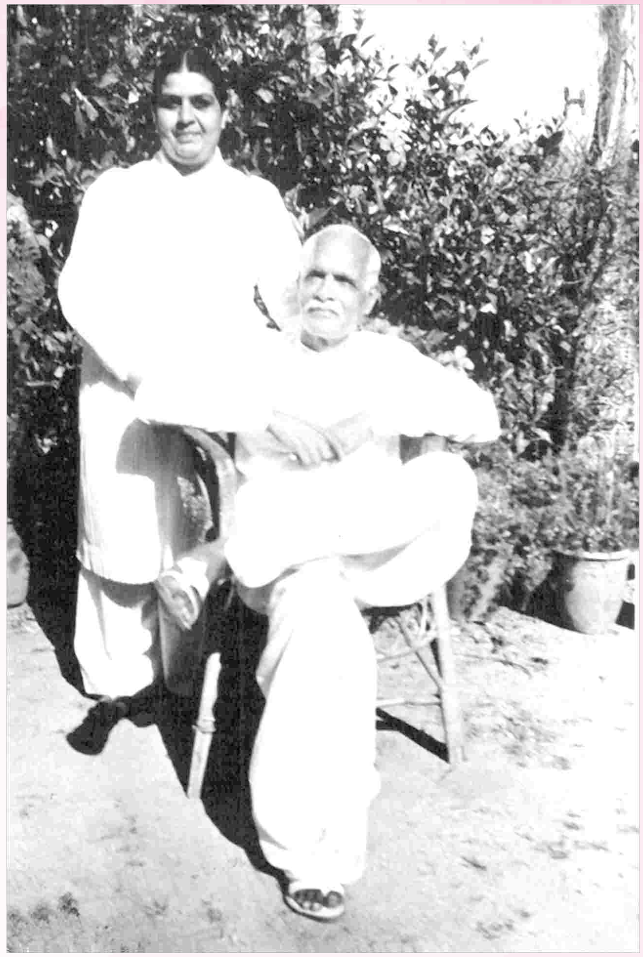

विधान के अनुसार शरीर की अस्वस्थता के निमित्त कारण को आगे रख कर उन्होंने पिताश्री जी से आगे ही प्रस्थान किया। जगदम्बा सरस्वती को जगत् की अम्बा होने के बावजूद कभी भी वृद्धावस्था में नहीं दिखाया गया है, उसका यही तो कारण है कि उन्होंने अपनी ज्ञान-वीणा का वादन करते हुए तथा शिवशक्ति सेना का नेतृत्व करते हुए प्रौढ़ अवस्था में अपनी देह का विसर्जन किया था।

प्रसिद्ध हुई ओम् राधे नाम से

मातेश्वरी जी ने जब पहले-पहल तत्कालीन 'ओम मण्डली' के सत्संग में प्रवेश किया था तब न तो वे 'सरस्वती' नाम से ज्ञात थीं, न ही उन्हें कोई 'जगदम्बा' शब्द से सम्मानित करता था। कुछ ही दिनों में अपने विशेष

पुरुषार्थ, अपनी उच्च धारणा और महान प्रतिभा के कारण वे 'ओम राधे' के नाम से प्रसिद्ध हुई थीं। वे जब ओम् की ध्वनि किया करती और सितार पर तन्मय होकर दिव्य गीत गातीं तो सुनने वालों के हृदय के तार भी उसी स्वरलहरी से एक-तान होकर झंकारित हो उठते थे। वे देह-बुद्धि से ऊपर उठ कर हँस अथवा मुक्तपक्षी के समान रूहानियत के आकाश में उड़ान भरने और विचरण करने लगते थे। उन्हें अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता था और ऐसा लगता था कि कोई ज्ञान की लोरी देकर अपने वात्सल्य का अथवा मातृवत् प्यार का अनुभव करा रहा है।

ओम् राधे बनी ट्रस्ट की प्रधान

इस प्रकार उस रूहानी परिवार में शारीरिक दृष्टिकोण से अधिक आयु वाले होने के बावजूद भी सभी उन्हें अपने से वरिष्ठ अनुभव करते थे। ओम-राधे भी रूहानियत से दिन-रात उनकी ज्ञान-पालना करने में लगी रहती। इधर पिताश्री जी ने निमित्त बन कर कन्याओं-माताओं का जब एक ट्रस्ट (Trust) बनाया, तब ओम् राधे जी उसकी प्रधान निश्चित हुई। उस तरुण अवस्था में एक ईश्वरीय संस्थान की प्रथम अध्यक्षा अथवा प्रधान बनने का श्रेय प्राप्त करना कोई कम महत्व की बात नहीं है। एक नए विश्व की स्थापना के लिए जब इस संस्था की नींव पड़ रही थी और लोग इसके नए दर्शन, नए कार्यकलाप और नई नीति-रीति का डटकर विरोध करने में तत्पर थे, तब उन हलचल के दिनों में इसके कार्य-संचालन का उत्तरदायित्व लेना विश्व का एक अनुपम वृत्तान्त था। पिछले 2000 वर्षों में जिस पुरुष-प्रधान समाज में नारी का गौण स्थान रहा था, उसमें एक कुमारी का सामने आकर एक-साथ कई जबरदस्त चुनौतियों को स्वीकार कर अभय रूप से उनका सामना करना, विश्व के इतिहास की ऐसी ज्वलंत घटना है जिसका उदाहरण ढूँढ़ने से भी कहीं नहीं मिलेगा।

कन्याओं-माताओं के अनोखे दल का किया नेतृत्व

उस समय के घटना-चक्र पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो हमारी अंगुली स्वयं होठों पर जा टिकती है और हमारे चेहरे पर आश्चर्य के चिह्न आ जाते हैं। एक तरफ सिन्ध के 'भाई-बंद' (व्यापारी-वर्ग) और 'आमिल' (अफसरशाही) का कड़ा विरोध, दूसरी ओर नव-निर्मित विधान सभा में मुख्यमन्त्री और विधि मन्त्री पर दबाव, तीसरी ओर अंग्रेजी सरकार के पुराने कानून, चौथी ओर पंडित और पुजारी वर्ग का किन्हीं भ्रांतियों एवं स्वार्थ के कारण गठ-बंधन, पाँचवीं ओर अपराधी तत्वों का तनावपूर्ण व्यवहार और छठी ओर मनोविकारों से पीड़ित कुछ लोगों का कन्याओं, माताओं पर अत्याचार तथा उनके साथ दुर्व्यवहार – इन सबका बना हुआ पेचीदा, टेढ़ा, जटिल और दुरूह वातावरण था कि जिसका सामना कोई विरला ही साहसी कर सकता था। ऐसी वेला में वे पिताश्री के साथ नैतिकता का ध्वज अपने हाथ में मजबूती से लिए हुए कुमारियों और माताओं के एक ऐसे अनोखे दल का नेतृत्व कर रही थीं कि जिसका स्मरण कर उस शक्तिरूपा के सामने जन-जन का मस्तक झुक जाता है। इससे उनकी निर्भयता, दृढ़ता, निश्चयात्मकता, साहस, सहनशीलता और नैतिक बल की पराकाष्ठा का स्पष्ट परिचय मिलता है। जैसे माँ अपने बच्चों का लालन-पालन करने के अतिरिक्त शिशुकाल में उनकी रक्षा करती है, वैसे ही उन्होंने ज्ञान की लोरी ही नहीं दी और दिव्य गुणों से उनकी पालना ही नहीं की बल्कि प्रारम्भिक हलचल के समय उन्हें संरक्षण भी प्रदान किया।

ज्ञान प्राप्ति के बाद जीवन में आया चमत्कार

यूं तो इस ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति से पहले भी सांसारिक दृष्टिकोण से उनका जीवन जन-सामान्य से उच्च और आकर्षणमय था। वे विद्या-अध्ययन में बहुत कुशल थीं, संगीत में प्रतिभाशाली थीं, संस्कारों में मिलनसार, नम्र और मधुर थीं और व्यक्तित्व में आकर्षणमूर्त थीं। अपने इन गुणों के कारण अपने नगर में, बालिकाओं में वे जानी-मानी-पहचानी हुई थीं परन्तु ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति के बाद उनके जीवन में एक ऐसा चमत्कार आया कि हर आस्तिक-नास्तिक, विरोधी-

श्रद्धालु उनका साक्षात् होने पर ऐसा अनुभव करता था कि रूहानी नाते से वे उनकी माँ हैं। उनका प्यार, उनकी मधुरता, उनकी पवित्रता, उनकी ज्ञान की गहराई और उनका तपस्वी जीवन, हरेक को प्रभावित करता था। उनके लौकिक सम्बन्धियों का कथन था कि वे ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति से पहले भी अपने सेवा-भाव, सहयोग, स्नेह, कार्य-कुशलता और व्यवहार की उज्ज्वलता से प्रभावित करती थीं परन्तु ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति के बाद तो उनकी वाणी में वह प्रभाव आ गया था कि संशय मिट जाता था, मनोविकार भाग जाते थे और उनके व्यक्तित्व में वह रूहानियत थी कि जन्म-जन्मान्तर से सन्तप्त आत्माओं को शान्ति का वरदान मिलता था। सचमुच में वे माँ सरस्वती थीं जो ज्ञान-वीणा वादन से विद्याकुशल बना देती थीं और वर देकर अपवित्रता हर लेती थीं। पिताश्री जी से उनको विशेष सम्मान-युक्त स्थान मिला था। पिताश्री से पहले मातेश्वरी की वाणी हम सुना करते थे। पिताश्री उन्हें विशिष्टता से स्वागत और विदाई देते थे। वे इस ईश्वरीय परिवार में उन्हें ही जगदम्बा अथवा सरस्वती का स्थान देते थे। ये सब उनकी महानता का द्योतक है।

मातेश्वरी जी की शिक्षाएँ

मातेश्वरी जी अपनी वाणी में प्राय: कर्मों की गति पर प्रकाश डाला करती थीं। वे कहती थीं कि मनुष्य अपने कर्मों की निकृष्टता के कारण ही गिरा है और अब कर्मों को श्रेष्ठ बनाने से ही वह महान बन सकता है। अत: कर्मों का संन्यास करने से तो वह श्रेष्ठ नहीं बन सकेगा। वे कहती थी कि प्राय: सभी धर्मों के लोग यह तो कहते हैं कि परमात्मा हमारा माता-पिता, बन्धु, सखा, सद्गुरु और सर्वस्व है परन्तु जैसे वे लौकिक जीवन में इन सम्बन्धों को व्यवहारिक (Practical) रूप से निभाना जानते हैं, वैसे पारमार्थिक दृष्टिकोण से परमात्मा के साथ अपने इन सम्बन्धों को निभाना नहीं जानते। यही कारण है कि वे परमात्मा से मुक्ति-जीवनमुक्ति या सुख-शान्ति की निधि की प्राप्ति नहीं कर सकते। वे कहा करतीं कि जन्म-जन्मान्तर देह-अभिमान और विकारों वाला जीवन तो देख लिया। शास्त्रों, तीर्थों, यात्राओं आदि का पुरुषार्थ करके भी देख लिया, आज जो हमारा हाल है, क्या उससे यह स्पष्ट नहीं है कि इनसे हमें वह प्राप्ति नहीं हुई जो हम चाहते हैं। तब फिर सोचने की क्या बात है? अब परमपिता परमात्मा केवल इतना ही तो कहते हैं कि इन विकारों को छोड़ो और इस रहे हुए जीवन के बाकी समय में पवित्र बनो ताकि मैं आपको ईश्वरीय वर्सा दूँ। वे पूछती थीं कि क्या यह सौदा नहीं करना है? विनाश सामने है, अब भी फैसला नहीं करोगे तो कब करोगे?

इस प्रकार मातेश्वरी जी शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा के महावाक्यों को सरलता से समझाते हुए और नियमों तथा मर्यादाओं की सुगमता से धारणा कराते हुए सभी को आगे बढ़ाते चल रही थीं। वे अति विशिष्ट रोल अदा करते हुए, विश्व-नाटक में दूसरा रोल अदा करने चली गयीं जिससे कि सतयुगी राज्य-भाग्य की पुनर्स्थापना में मदद मिले। धन्य हैं वे! उन्हें हमारा कोटी-कोटी धन्यवाद। हम कृतार्थ हैं उनके महान कर्त्तव्यों के लिए। चौबीस जून का दिन पुन: न जाने कितने संस्मरण उभार लाता है हमारे स्मृति-पटल पर! ❖

आवश्यकता है

निम्नलिखित पदों पर ग्लोबल अस्पताल माउंट आबू तथा आबू रोड में सेवा हेतु भाई-बहनों की आवश्यकता है:-

1. रेजिडेन्ट मेडिकल ऑफिसर – M.B.B.S.
2. फार्मासिस्ट – D.Pharma
3. कंप्यूटर ऑपरेटर – ग्रेज्युएट डिग्री धारक, कंप्यूटर का ज्ञान तथा टाइपिंग में कुशलता। अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई किये हुए उम्मीदवारों को प्रमुखता।
4. लैब टेक्नीशियन – D.M.L.T.

चयनित उम्मीदवारों को उचित वेतन सुविधा

संपर्क करें :- 09414144062;

E-mail: ghrchrd@ymail.com

मम्मा की विशेषताएँ

❍ दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

प्रश्नः- मीठी मम्मा से आपने क्या-क्या सीखा?

उत्तरः- हमारे सभी पूर्वज त्यागी-तपस्वीमूर्त बनकर रहे हैं, उनमें भी मम्मा नम्बरवन थी। मम्मा-बाबा से बहुत अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिली हैं। जैसे बाबा में दयाभाव, क्षमाभाव था, ऐसे मम्मा भी दयालु-कृपालु थी। कैसी भी आत्मा होगी तो मम्मा कहेगी, बच्चे, सब ठीक हो जायेगा। कभी नहीं कहा होगा कि यह क्यों किया? पास्ट इज़ पास्ट, बच्चे, फिर से नहीं करना। मम्मा करेक्शन नहीं देती थी। अनुभव इसलिए सुनाये जाते हैं, इन्हें सुनकर हमारी कमी समाप्त हो जायेगी।

मम्मा समझाती थी, सबसे अच्छी बात है रियलाइजेशन, कोई भी बात जब रियलाइज होती है तब परिवर्तन आता है। मैं आत्मा हूँ, परमात्मा का बच्चा हूँ, कर्मों की गुह्यगति को समझा लेकिन समझने के साथ जब उसे रियलाइज किया तब श्रेष्ठ कर्म स्वरूप में आया।

ध्यानी दादी मम्मा की लौकिक में मासी थी, उसको देख मम्मा समर्पण हुई। ध्यानी दादी की शादी हुई थी लेकिन थोड़े समय के बाद पति ने शरीर छोड़ दिया, उन दुःख की घड़ियों में वह बाबा के पास आई, बाबा ने ऐसी दृष्टि दी जो वह ध्यान में चली गई, बाबा ने सेकण्ड में जैसे सब दुःख हर लिये। ध्यानी दादी ने मम्मा को धर्म की बेटी बनाया था इसलिए ध्यानी दादी को खुशी बहुत थी।

मम्मा ने 24 जून, 1965 को सुबह नाश्ते के समय सभी को अपने हाथों से अंगूर खिलाये, दृष्टि दी, बाबा बाजू में बैठे थे, शाम को चार बजे देह त्याग किया। उन्हें जरा भी दुःख नहीं हुआ क्योंकि वे शरीर के अधीन नहीं थी, दुःख करने के संस्कार दुःखहर्त्ता ने खत्म कर दिये। कोई ने भी शरीर छोड़ा, ओके, अगर हम अच्छे वायब्रेशन रखेंगे तो वो आत्मा अच्छा शरीर लेगी और अगर हम रोयेंगे-पीटेंगे

मम्मा के साथ दादी जानकी

तो हम उसके दुश्मन ठहरे क्योंकि वह आत्मा भी दुःखी होगी। हम आत्माओं को भगवान ने निश्चय बुद्धि से मायाजीत, मोहजीत बना दिया है। मायाजीत की निशानी है मोहजीत।

मम्मा ने ध्यान खिंचवाया, बच्चे, इस पढ़ाई की बहुत वैल्यू चाहिए। वैल्यू होगी तो पढ़ाई प्रैक्टिकल जीवन में होगी, भगवान की पालना की कदर होगी। मुझे स्वयं भगवान ने अपना बनाया है, बचपन से लेकर आज तक उसकी पालना के नीचे रहे हैं। कभी अधीनता का संस्कार ही नहीं है। पालनहार इतनी पालना दे रहा है, भावना यह है कि ईश्वर की पालना के अन्दर सभी आ जाएँ। योग से बल मिलता है फिर मम्मा-बाबा जैसे नेचुरल तपस्वीमूर्त बन जाते हैं।

एक बार मैंने पूछा, मम्मा, मैं पुरुषार्थ में क्या ध्यान रखूँ? मम्मा ने कहा, किसी का अवगुण थोड़ा भी चित्त पर नहीं रखना। वो दिन, आज का दिन। अगर कोई भी बात मेरे चित्त पर है तो मैं एकाग्रचित्त नहीं हो सकती। अन्तर्मुखता से एकाग्रता होती है।

मम्मा वन्डरफुल उदाहरणमूर्त कन्या थी। मम्मा कभी मुरली हाथ में ले करके, पढ़ कर नहीं सुनाती थी, बाबा से

एक बार सुना, फिर ज्यों का त्यों जबानी सुनाती थी। मम्मा मन को बहुत शान्ति से चलाती थी। यज्ञ के लिए प्यार, नियमों अनुसार चलना, एक्यूरेट रहना, समय पर क्लास में आना, ऐसे मम्मा ने हमें प्रैक्टिकल मैनर्स सिखाये हैं। उन्होंने ही करके सिखाया कि कैसे बाबा की मुरली ध्यान से सुननी चाहिए, फिर उसे जीवन में लाना चाहिए।

मम्मा का अशरीरीपन का अभ्यास ऐसा था, हम कभी हाथ में हाथ देते थे तो अशरीरी हो जाते थे इसलिए हम मम्मा का हाथ पकड़ते थे क्योंकि मम्मा का हाथ स्पेशल था। हम आपस में कहते थे, तुम छोड़ो, मैं थोड़ा समय मम्मा का हाथ पकडूँ ना। मम्मा के बाजू में बैठें तो कुछ बोलने का रहता ही नहीं था, प्रेरणा आती थी कि हम भी मम्मा जैसा अभ्यास करें।

मम्मा समय की बहुत कदर करती थी, कभी भी मम्मा के मुख से कोई एक्स्ट्रा शब्द नहीं निकला। कभी किसी की गलती किसी को सुनाई नहीं। कोई मम्मा को सुनाये तो उसे समाकर, शिक्षा देकर बात खत्म कर देती थी। ऐसी रॉयल्टी से हम भी एक-दो की पालना करें तो बहुत उन्नति हो सकती है। अभी भी अगर कोई चाहे तो नम्बरवन में आ सकता है। बीती सो बीती, जरा भी पीछे की बातों को न सोचें। पीछे की बात सोचना माना अपने को बांधके रखना। नम्बरवन में आने वाला सबसे सीखता है। कोई भी पुराना पाप रहा हुआ न हो तो नम्बरवन में आ सकेंगे।

मम्मा का भक्ति में जो गायन है जगत अम्बा, काली, सरस्वती, वैष्णो देवी, शीतला, दुर्गा... यह सब स्वरूप उनके देखे हैं। यज्ञ में जिस दिन से आईं तो जैसा नाम था राधे, प्रैक्टिकली सतयुगी राधे के संस्कार लेकर आईं। वही फिर लक्ष्मी बन रही हैं तो वे सारे लक्षण उनमें देखे। फिर काली भी है, मम्मा के सामने जायेंगे तो पुराने संस्कार भस्म। बड़े-बड़े गृहस्थियों को, बड़ी उम्र वाले बुजुर्गों को भी मम्मा ने योगी बना दिया। मम्मा की कभी कहीं आँख नहीं डूबी, न खाने में, न पहनने में। मम्मा सदा त्यागी-तपस्वीमूर्त होकर रही। हम उस माँ के बच्चे हैं। जब मम्मा ने शरीर त्याग किया तो कइयों को मम्मा की ज्योति का अनुभव होने लगा। भगत लोग उस माँ को पुकारते हैं, वे उनकी सब मनोकामनायें पूर्ण करती हैं। सरस्वती के पुजारी भिन्न कामना से पूजा करेंगे, काली के पुजारी बलि चढ़ायेंगे, शीतला देवी के सामने आते ही शीतल हो जायेंगे। जिसके दर्शन करने के लिए भक्त गला काटते हैं कि सिर्फ एक बार माँ के दर्शन हो जायें, हम उस माँ के बच्चे हैं, उनकी दृष्टि से पले हैं, उनके हाथों से खाया है।

मम्मा ने कभी आवाज से हँसा भी नहीं होगा। मम्मा के मुसकराने से ही हमको समझ मिल जाती थी। जैसे गुलजार दादी सन्देश लेके आती हैं और सुनाती हैं कि बाबा ने मुसकराया, उस मुसकराने में ही लेन-देन हो जाती है।

मम्मा सन्तुष्टमणि होकर रही और बाबा की मस्तकमणि बन गई। सदा सन्तुष्ट रहना, कितना भाग्यवती बनना है! मम्मा भगवती माँ है। वो कहती है, सदा सन्तुष्ट रहो, शान्त रहो। एक-दो को प्यार से देखो। जैसे मम्मा-बाबा ने हमको पालना दी है, ऐसे एक-दो को प्यार से देखो, पालना दो।

मम्मा हर मर्यादा में एक्यूरेट चली। मीठी-मीठी मम्मा की यही हम बच्चों के लिए कामना रही है कि बाबा के ये बच्चे, गुलाब के फूल जैसे होवें। तो अपनी दृष्टि-वृत्ति ऐसी हो, रूहानियत में रह करके वरदानी माँ से वरदान ले लें। दूसरे की कमी आज से कभी नहीं देखना। दूसरे की कमी को देखने से उसकी कमी मेरे में आ जायेगी इसलिए कभी यह भूल नहीं करना। किसी में, किसी भी प्रकार की कोई कमी है, तो उसे बलि चढ़ा दो। अगर कमी-कमजोरी रह गई तो शीतला, काली, दुर्गा, जगदम्बा का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

मम्मा हर परिस्थिति में सदा अचल, अडोल, एकरस, स्थिर रही, कभी हलचल में नहीं आई। तो हमारा जीवन भी ऐसा हो जो अनेक आत्माओं को परिवर्तन होना सहज हो जाए। मम्मा-बाबा ऐसा जीवन जीना हमको सिखा रहे हैं। हिलाने वाली कैसी भी बात आ जाए, हिलना नहीं, स्थिर रहना। ❖

राजयोग से तनावमुक्ति

❍ ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश, सेवानिवृत्त प्राचार्य, रोहतक (हरियाणा)

आजकल हर आदमी, बच्चे से लेकर बूढ़े तक तनावग्रस्त है। जिन्दगी बहुत तेज़ व अफरा-तफरी से युक्त हो गई है। आजकल माता-पिता दोनों नौकरी करते हैं तो बच्चे को 2-3 साल की उम्र में ही स्कूल या क्रैच में डाल दिया जाता है। उसे माता-पिता का प्यार नहीं मिलता। विद्यार्थी को ज्यादा अंक लेने का तनाव, बड़े होकर किसी अच्छे संस्थान में प्रवेश लेने का तनाव, पढ़ने-लिखने के बाद नौकरी पाने का तनाव रहता है। माता-पिता को घर चलाने, बच्चों की शादी आदि का तनाव, बुढ़ापे के प्रति असुरक्षा की भावना भी तनाव पैदा करती है।

समस्या उत्पन्न करती हैं विकृतियाँ और अपेक्षाएँ

पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से हमारी जीवन शैली बदल गई है। हम आरामपसंद हो गये हैं। मशीनी युग में शारीरिक परिश्रम नहीं करते जिससे तरह-तरह की बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं। पहले आदमी 90-100 वर्षों तक आराम से निरोग रहता हुआ जी लेता था। अब औसत आयु कम हो गई है। खान-पान शुद्ध नहीं रहा। अविश्वास, बुरी संगत, चरित्रहीनता, धोखाधड़ी आदि बढ़ रहे हैं। पहले आदमी देवता था फिर मानव बना और अब दानव बनता जा रहा है। अगर यहाँ श्रेष्ठता, मानवता, धर्म, सच्चाई, भाईचारा होता तो इसे कलयुग की संज्ञा ही क्यों दी जाती! अगर हम इन समस्याओं से बचना चाहते हैं तो हमें अपनी मन:स्थिति को श्रेष्ठ बनाना होगा। हमारे मन की विकृतियाँ और अपेक्षाएँ ही जीवन में समस्याएँ उत्पन्न करती हैं। राजयोग से मन की श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त होती है।

राजयोग से बनता है जीवन कलात्मक

राजयोग द्वारा आत्मा व परमात्मा का मिलन होता है। इसका अर्थ है अपने मन व बुद्धि का सम्बन्ध परमपिता परमात्मा से जोड़ना जिससे पवित्रता व शक्तियाँ बढ़ने लगती हैं। मन पर नियन्त्रण हो जाता है। विभिन्न परिस्थितियों में

बुद्धि को सन्तुलन में रखना आ जाता है फलस्वरूप जीवन शान्त, सरल, सुखी, खुश, आनन्दित व तनावमुक्त होने लगता है। राजयोग से दूसरों के प्रति हमारा नजरिया बदल जाता है जिससे सम्बन्धों में मधुरता आ जाती है। संकल्पों में बल आने से राजयोगी छोटी-छोटी बातों से तनाव में नहीं आता। राजयोग केवल आत्मा की मुक्ति का ही मार्ग नहीं है, यह तो जीते जी जीवन को कलात्मक बनाना सिखलाता है। क्रोध व भय से मुक्त होकर मनुष्य इसी जीवन में जीवन-मुक्ति का अनुभव कर सकता है। राजयोग द्वारा उसे जीवन का मूल्य व लक्ष्य भी समझ में आ जाता है और जीवन जीना भी सीख लेता है।

राजयोग से मिलती है व्यसन-मुक्ति

राजयोग आदमी को शान्ति, सहनशीलता व धैर्य सिखाता है। कर्म चाहे कितनी ही जल्दबाजी का हो, परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी विकराल हों, राजयोगी के मन की गति कभी तीव्र नहीं होती। वह धैर्य से काम लेता है, बोलेगा तो शान्त भाव से, मीठे व सरल मन से। राजयोग से कई भयंकर बीमारियों का निदान हुआ है, इसके अभ्यास से चित्त प्रसन्न रहता है इसलिए यह औषध का काम भी करता है। तनाव से मुक्त होने की इच्छा लेकर लोग शराब, धूम्रपान, चरस, गांजा, अफीम, नशीली गोलियां, ड्रग्स आदि का प्रयोग करते हैं लेकिन राजयोग तो मनुष्य को व्यसनों से दूर करता है और जीवन का सच्चा व सम्पूर्ण सुख देता है, हजारों व्यसनी, जिनके परिवारजन परेशान थे, राजयोग द्वारा

व्यसनमुक्त बने हैं। राजयोग द्वारा प्राप्त ईश्वरीय आनन्द, इन व्यसनों के क्षणिक आनन्द को नीरस अनुभव करवा देता है, आत्मा में बल आ जाता है फिर कदम व्यसनों की ओर नहीं जाते। आज कितनी ही नारियाँ, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को दिल से दुआएं दे रही हैं इसलिए कि राजयोग ने उनके पतियों की शराब, माँस, नशे की भयंकर आदतें छुड़ाकर उनके परिवार की रक्षा कर ली, घर उजड़ने से बच गये।

अनन्त विजय की ओर अग्रसर

राजयोग से मनुष्य की कार्यक्षमता भी बढ़ जाती है। इच्छाएं, आशाएं व अपेक्षाएं कम हो जाती हैं। निराशा कम हो जाती है और अधिक सफलता मिलती है। आन्तरिक शक्तियों का विकास होने के कारण वह जीवन को खेल की तरह खेलने लगता है। जीवन सरलता व महान विचारों का भण्डार बन जाता है, हीन भावनाएं नष्ट हो जाती हैं। उसका दृष्टिकोण उचित व व्यापक बन जाता है। राजयोग की सबसे बड़ी उपलब्धि है सन्तुष्टता। यह सुखी जीवन जीने का आधार है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ सम्पन्नता भी है। इस प्रकार राजयोगी मनोविकारों पर विजय प्राप्त करता हुआ एक अनन्त विजय की ओर अग्रसर होता है। उसकी विजय से उसके अपने जीवन में खुशियों के दीप जगमगा उठते हैं। उसकी विजय सफलता का आह्वान करती है और जीवन कलियुग में रहते हुए भी इसके प्रभाव से मुक्त हो जाता है।

यह ठीक है कि विज्ञान ने हर एक क्षेत्र में बहुत तरक्की की है। भौतिक सुख भी मिले हैं लेकिन इनके साथ-साथ आध्यात्मिक सुख होने भी आवश्यक हैं। आध्यात्मिक बल के अभाव में केवल भौतिक सुख मनुष्य को इच्छाओं के मरुस्थल में ले जाकर छोड़ देते हैं। वह प्यासे हिरण की तरह मन की शान्ति के लिए भटकता रहता है। अध्यात्म की आवश्यकता को जानकर मनुष्य को राजयोग के द्वारा अपनी आन्तरिक शक्तियों को, मन की खुशी को व श्रेष्ठ चिन्तन को बढ़ाना चाहिए ताकि वह हर परिस्थिति में सुखी रह सके, उसे किसी डॉक्टर या मनोचिकित्सक के पास जाने की आवश्यकता ही न पड़े। राजयोग द्वारा इन्द्रियों को नियन्त्रण में कर लें तो आन्तरिक शान्ति मिलेगी व तनाव का नामोनिशान नहीं रहेगा। ❖

श्रद्धांजलि

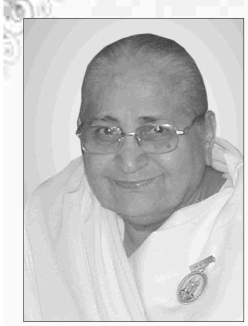

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा की अति लाडली, बेहद सेवाओं पर उपस्थित, साकार मात-पिता के हस्तों से पली, विदर्भ क्षेत्र की सेवाओं को सुचारु रूप से चलाने वाली पुष्पारानी बहन ने सन् 1956 में दादी मनोहर इन्द्रा से करनाल में ज्ञान प्राप्त किया। मम्मा-बाबा के सम्मुख आते ही आपने विश्व कल्याण की सेवाओं में अपना जीवन समर्पित कर दिया। आपकी लौकिक बड़ी बहन और माता जी (सावित्री बहन और किशन देवी माता) भी आपके साथ सेवा में समर्पित हो गईं। भारत के विभिन्न स्थानों पर अपनी सेवायें देते हुए आप 1972 में नागपुर पहुंची और सेवाओं की धूम मचा दी। वर्तमान समय करीब 60 हजार ब्रह्माकुमार भाई-बहनें तथा 400 से अधिक समर्पित टीचर्स बहनें आपकी पालना में पल रहे थे। कुछ समय पूर्व आपने संकल्प लिया था कि हमें नागपुर में बहुत बड़ा रिट्रीट सेन्टर बनाना है। वहाँ अभी बहुत तीव्र गति से निर्माण कार्य चल रहा है।

अचानक पिछले 1 वर्ष से आपको लीवर कैंसर की तकलीफ हुई। काफी इलाज चलता रहा लेकिन ड्रामा की भावी, 23 अप्रैल, 2016 को सायं 7.30 बजे ट्रैफिक कन्ट्रोल के गीत के साथ आप अपने भौतिक शरीर का त्याग कर बापदादा की गोद में चली गईं।

ऐसी स्नेही, दैवी रत्न, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। ❖

गतांक से आगे ...

मानव जीवन में धन की उपयोगिता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

मनुष्य अपनी मुक्ति, सद्गति आदि की चिन्ता करते हैं परन्तु जीवित रहते अपने धन की गति (Monetary Movement) पर ध्यान नहीं देते, जो उनके आत्म-स्वरूप के वर्तमान और भविष्य को प्रभावित करती है। जो भी मनुष्य अपने धन की गति पर रोक लगाता है, जीवनोपरान्त उसकी आत्मा को अवगति-अधोगति ही प्राप्त होती है। मरणोपरान्त छूट गए धन की स्मृति उसे दुख देती है। आप अपने धन को जितनी ज्यादा गति देंगे अर्थात् शुभ कार्य में लगायेंगे, उतना ही वह दूसरों का कल्याण करेगा और आपकी सद्गति करेगा। जल भी जितना गतिवान होता है, उतना शुद्ध व ताजा बना रहता है। समुद्र के जल में अधिकतम गति है अत: इतना विशाल जल-स्रोत कभी बासी या खराब होने की स्थिति में नहीं आता। अनादि काल से नदियों व मनुष्यों के द्वारा समुद्र में कचड़ा डाला जा रहा है परन्तु इसके जल की तीव्र गति कचड़े का भी कल्याण करती रहती है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को इससे जुड़े मनुष्यों से जो भी आर्थिक सहयोग प्राप्त होता है, उसे तीव्रतम गति से जग कल्याण के कार्यों में प्रवाहित कर दिया जाता है। इससे देने वाले का जबर्दस्त भाग्य उसी प्रकार बनता है जैसे कि किसी अच्छी कम्पनी में इन्वेस्ट करने वाले को बड़ा लाभांश (Dividend) प्राप्त होता है और उसकी बुद्धि ईश्वर की स्मृति में टिकने लगती है।

धन जाता कहाँ है? धन आता कहाँ से है?

कलियुग में दान की वृत्ति चरम पर है। चूंकि आम व्यक्ति परिस्थितियों से जूझते हुए सुख-शान्ति से वंचित है अत: वह धार्मिक कार्यों में दान दे कर अपना भविष्य उज्ज्वल करना चाहता है। उसके द्वारा तीर्थस्थलों पर जिस प्रकार से बेतहाशा दान किया जा रहा है, उसके अनुरूप वहाँ विकास कार्य व सुविधाएं दिखाई नहीं देती। इससे यह प्रश्न खड़ा होता रहा है कि आखिर दान से प्राप्त धन जा कहाँ रहा है? इसके विपरीत, ब्रह्माकुमारी आश्रमों में जब दान देता कोई दिखाई नहीं देता और बड़े-बड़े सेवा कार्य संपन्न होते देखे जाते हैं, तो यह प्रश्न खड़ा किया जाता है कि आखिर इतना पैसा कहां से आ रहा है? इस रहस्य को समझने की आवश्यकता है। यहाँ मुख्यत: ब्रह्माकुमार-कुमारियों के द्वारा ही भोलेनाथ की भण्डारी में गुप्त-सहयोग के रूप में धनराशि डाली जाती है। चूंकि इस धन के साथ नि:स्वार्थ सेवा भावना, शुभ कामना जुड़ी होती है और शिवबाबा का इसे अनुग्रह प्राप्त होता है अत: थोड़े धन से भी बड़े कार्य संपन्न हो जाते हैं। मोटे तौर पर भक्तों के द्वारा तीर्थस्थलों पर दिये जा रहे दान की 'उत्पादकता' (Productivity) या उपयोगिता मात्र 25-30 प्रतिशत है जबकि ब्रह्माकुमारी आश्रमों में यह 100 प्रतिशत है। जिस प्रकार पिता या दादा छोटे बच्चे की गुल्लक में कुछ पैसा डाल कर बच्चे को खुश करते हैं, उसी प्रकार शिवबाबा भी भण्डारी को भरपूर रखते हुए बच्चों को सेवा कार्य में धन का अभाव नहीं होने देते। भण्डारी का पैसा तीव्र गति से सेवा कार्य में प्रवाहित होता रहता है और धन की यह गतिशीलता ही धन को शक्तिरूप देती है। गतिशील धन सर्व के सद्गति दाता शिव के कल्याणकारी कर्त्तव्य का हिस्सा बन कर निमित्त सहयोगकर्त्ताओं (धनअर्पणकर्त्ता) के कई जन्मों का भाग्य बनाता है। इससे निमित्त सहयोगकर्त्ता को हार्दिक खुशी होती है, उसके मन व मति को उमंग व प्रफुल्लता का अनुभव होता है। इसके

विपरीत, मनमत या धनमत वाले मनुष्य की मति मारी जाती है जिससे उसके धन की गति के अवसर और आत्मा के 'प्रालब्धी' बनने के दुर्लभ अवसर मारे जाते हैं। जड़ धन की गतिहीनता उस आत्मा की भाग्यहीनता हो जाती है।

प्रकृति के कुदरती विधान भी हैं

युधिष्ठिर से यक्ष ने प्रश्न किया था कि इस संसार में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है? आज का यक्ष प्रश्न भी यही है और इसका उत्तर है कि 'आत्मा संस्कार व पाप-पुण्य अगले जन्म में साथ ले कर जाती है। जीवन में प्राप्त धन को किसी भी कार्य में लगाने की उसे पूरी छूट होती है। यह जानते हुए भी कि स्थूल धन यहीं रह जाना है, वह अपने धन को दुखी, वंचित व घोर निर्धनता से त्रस्त मनुष्यों की सेवा में लगा कर इसे पुण्य या प्रालब्ध में नहीं बदलती।' इससे बड़ा आश्चर्य कोई दूसरा नहीं। जिस प्रकार एक डॉक्टर यदि फीस न दे पाने वाले मरीज को मरता छोड़ देता है तो इसके फलस्वरूप भविष्य में उसे इससे भी बदतर स्थिति का फल भुगतना ही होगा उसी प्रकार यदि कोई संपन्न व्यक्ति, घोर त्रासदी में पड़े पड़ोसी को देखते हुए भी अनदेखा करता है, उसकी मदद नहीं करता है, तो निश्चित तौर पर उसे भविष्य में ऐसी ही मदद का मोहताज होना होगा। यदि यह मनुष्य सृष्टि अनादि काल से अपने शाश्वत अविनाशी स्वरूप को कायम रखे हुए है, तो इसके पीछे कुछ कुदरती विधान हैं। प्रकृति मनुष्यों को देती ही रहती है और यदि कोई अपने मिले हुए धन को अभावग्रस्त की सेवा में नहीं लगाता है, तो प्रकृति उससे छीन कर दूसरे को देना भी जानती है।

जहाँ धनाकर्षण और कामाकर्षण, वहाँ ईश्वराकर्षण नहीं

यदि धन का सदुपयोग होता है तो यह शक्ति है और यदि इसका अनुपयोग, दुरुपयोग होता है, तो यह माया (विकार) है। कलियुग में धन मायारूप बन कर ऊपर उठाने का वादा करता है और चरित्र, स्वास्थ्य, खुशी, शान्ति आदि सभी से नीचे गिरा देता है। इतना नीचे कि ईश्वर को पुकारने लायक भी न रहे। कहावत है कि 'इतना नीचे मत गिर जाना कि तुम पुकारो और ईश्वर सुन ना पाए और इतना ऊपर भी मत उठ जाना कि कोई दुखी पुकारे और तुम सुन ना पाओ।' मनुष्य जब अच्छे दिनों में दुखियों की पुकार सुनना बंद कर देते हैं, तब बुरे दिनों में उनकी पुकार ईश्वर तक पहुंच नहीं पाती। जहां धनाकर्षण और कामाकर्षण है, वहां ईश्वराकर्षण हो नहीं सकता। जहां अपवित्र धन है, वहां गुण नहीं और जहां अवगुण हैं, वहां पवित्र धन नहीं। एक महाविनाशकारी परन्तु कल्याणकारी महापरिवर्तन के बाद स्थिति उलटने वाली है और पवित्र धन व सद्‌गुणों का दैवी राज्य आने वाला है।

मनुष्यात्मा के आत्मिक धन अर्थात् ज्ञान, गुण व शक्तियां यदि जड़ता में सुषुप्त हैं, तो उसका स्थूल धन भी गतिहीन हो जाता है और आत्मा भी दो युगों या 2500 वर्ष तक शान्तिधाम (ब्रह्मलोक) में सुषुप्त पड़ी रहती है। सतयुग में प्रकृति व धन अपने सभी रूपों में मनुष्य की सेवा में गतिशील रहते हैं। मनुष्य मुक्ति मांगते हैं परन्तु मुक्ति है क्या, इसे जानते नहीं। वे न तो यह देखते हैं कि उनका दान गति में जा रहा है या क्षति में और न ही अनावश्यक धन को मुक्ति देते हैं। ऐसे में जब महाविनाश के समय मनुष्यात्माएँ शरीर से मुक्त होंगी, तो ईश्वरीय ज्ञान को नकारने वाली व धन-आसक्ति रखने वाली आत्माएं मुक्ति या गति में तो आयेंगी परन्तु जीवन-मुक्ति (सतयुग) में नहीं। अभी न तो धन गतिशील है और न मनुष्य गुणवान। आइये धन के मायाजाल से बाहर निकल कर धन को गति-मुक्ति दें और तीव्र गति के पुरुषार्थ से जीवनमुक्ति के अधिकारी बनें।

(समाप्त)

'मुसकान' और 'मदद' ये दोनों ऐसे इत्र हैं जिन्हें जितना अधिक दूसरों पर छिड़केंगे उतना ही अधिक सुगंध आपके अंदर आयेगी।

ब्रह्मा की भूमि थाईलैंड तथा म्यांमार (ब्रह्मदेश) के यात्रा-संस्मरण

❍ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त सम्पादिका

अप्रैल 20, 2016 को ब्रह्मा की भूमि थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में सुबह 8.00 बजे चारों तरफ खिली धूप ने हल्की गर्माहट के साथ मेरा स्वागत किया। राजयोग के अनुभव साझा करने का यह 15 दिवसीय ईश्वरीय अवसर था।

थाईलैंड को ब्रह्मा की भूमि माना जाता है। यहाँ बौद्ध धर्म को सरकारी मान्यता है। हाल के कुछ वर्षों में हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई धर्मों को भी, इनकी संख्या को देखते हुए मान्यता दी जाने लगी है। बौद्ध धर्म की मान्यता के साथ-साथ यहाँ हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों का बाहुल्य देखने में आता है। हर घर, होटल, फैक्ट्री आदि के बाहर के खुले स्थान पर स्पीरिट हाउस (छोटा मन्दिर) होता है जिसमें अधिकतर चतुर्मुखी ब्रह्मा की मूर्ति होती है और उसके 8 हाथों में चक्र, माला, भाला आदि अलंकार होते हैं। इस देश का राष्ट्रीय जानवर हाथी है। जगह-जगह गणेश जी की मूर्तियाँ, लक्ष्मी-नारायण की मूर्तियाँ या विष्णु चतुर्भुज की मूर्तियाँ भी देखने को मिली।

रामायण का यहाँ खूब प्रचलन है। गिनीज़ बुक में दर्ज यहाँ का सभागार जिसमें 'श्याम निर्मित' शो (थाईलैंड का इतिहास – श्याम इसका पुराना नाम है) दिखाया जाता है, का नाम 'रामायण हॉल' है। दीवारों पर उकेरी मूर्तियों में फरिश्तों, देवताओं तथा रथ पर सवार अर्जुन और श्रीकृष्ण की छवि भी होती है।

भारत के पूर्व से लगते देशों के लोगों के नयन-नक्श भारत के पूर्वी लोगों से बिल्कुल मिलते-जुलते हैं। थाई लोग, मणिपुरी, आसामी लोगों की तरह गोल चेहरे वाले और बिना दाढ़ी-मूँछ के होते हैं। खुशमिज़ाज रहना, नाचना-गाना इनके खून में है। भारतीय मूल के एक थाई निवासी ने बताया कि एक बार यहाँ बाढ़ का पानी लोगों के घरों में घुस गया पर लोग घरों से बाहर खड़े हँसी-मजाक करते दिखे, कोई भी तनावग्रस्त नहीं दिखा। यहाँ की करेन्सी बाट (Baht) है जिसकी कीमत भारत की करेन्सी से दो गुनी है अर्थात् थाईलैन्ड का 1 रुपया भारत के दो रुपयों के बराबर है। यहाँ कन्याओं का बहुत मान है इसलिए कन्या भ्रूणहत्या जैसी कोई समस्या नहीं है। यहाँ का अधिकतर व्यापार महिलाएँ सम्भालती हैं। शादी के समय लड़के वालों को लड़की के परिवार वालों को भेंट आदि देनी पड़ती है।

थाईलैंड मुख्यत: कलात्मक देश है। अनेक प्रकार की कलात्मक मूर्तियों तथा नित्य प्रयोग में लाई जाने वाली हाथ निर्मित कलात्मक चीजों की यहाँ भरमार देखी। खेती में केमिकल्स का इतना प्रयोग नहीं होता, अमरूद, नारियल, मोसम्बी आदि में प्राकृतिक स्वाद और मिठास अनुभव हुआ।

थाईलैंड को परियों का देश भी कहा जाता है। यहाँ की प्राचीन राजधानी अयुथैय्या (अयोध्या) थी और राजाओं के नाम भी रामा प्रथम, रामा द्वितीय इस तरह रहा है। वर्तमान समय रामा नवम्, 85 वर्षीय राजा अतुल्यतेज भूमिबोल गद्दी पर हैं। देश में प्रजातन्त्र होते हुए भी राजा की मान्यता बहुत है। लोग उसकी पूजा करते हैं। उसने इस देश के लोगों को बहुत प्यार दिया है और उनके लिए बहुत कुछ किया है। सैकड़ों प्रकार की समाज सेवा की योजनाएँ उसकी निगरानी में चल रही हैं। हर कार्यालय में, व्यापारिक स्थल में राजा-रानी की मूर्ति लगाना अनिवार्य है और उसकी महिमा में राष्ट्रीय गान भी हर सार्वजनिक कार्यक्रम से पहले गाया जाता है। कलियुग के समय में जब हर जगह राज्यसत्ता भ्रष्टाचार से ग्रसित है, वहाँ के लोग अपने राजा को सतयुगी ही मानते हैं। आजकल वहाँ के

प्रधानमन्त्री अपदस्थ हैं और मिलिट्री राज चल रहा है पर जनता को कोई परेशानी नहीं है, जन-जीवन पूरी तरह सामान्य है। यह देश कभी अंग्रेजों के अधीन नहीं हुआ इसलिए बहुत कम पुराने थाई लोगों को अंग्रेजी भाषा आती है। आधुनिक समय में बहुत अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल खुल गए हैं, टूरिस्ट्स की बढ़ती संख्या को देखते हुए साइनबोर्ड्स पर थाई के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा भी लिखी दिखती है। सरकारी काम-काज थाई भाषा में चलता है। मूल्यों के ऊपर हर थाई स्कूल में एक सब्जेक्ट अवश्य होता है।

ब्रह्मा के इस देश में ब्रह्माकुमार-कुमारियों की काफी संख्या है। थाईभाषी भाई-बहनों के अलग सेवाकेन्द्र हैं और हिन्दीभाषी भाई-बहनों के लिए अलग व्यवस्था है। सभी भाई-बहनों में राजयोग की गहराई जानने और अनुभव करने की गहन उत्सुकता देखी। अमृतवेले के राजयोग के लिए डेढ़ घंटे तक भी गाड़ी चलाकर कई भाई-बहनें उपस्थित रहे। सार्वजनिक कार्यक्रमों में भी हिन्दीभाषियों की उपस्थिति और रुचि देखते ही बनती थी। भारत से दूर आकर भारत के मूल आध्यात्मिक ज्ञान की बातें उन्हें ज्यादा दिल में उतरती महसूस होती हैं।

इन सबके बीच एक मुस्लिम युगल परकीत भाई तथा बीबी बहन ने बैंकाक में जो मिनी मधुबन बनाया है वह देखने योग्य है। मधुबन के चारों धामों की हूबहू लगने वाली कॉपी उन्होंने अपनी पैतृक भूमि पर बनाई है, जो काफी सराहनीय है। हर आने वाले का वे जिस मुस्कान और हार्दिक स्नेह से स्वागत करते हैं, वह अवर्णनीय है। एक घण्टे की मुलाकात के दौरान बापदादा, मधुबन, मुरली और दैवी परिवार के प्रति उनके उमड़ते स्नेह को देख हम गद्‌गद् हो उठे।

थाईलैंड में 5 दिन व्यतीत करने के बाद म्यांमार जाना हुआ। भारत के पूर्व में स्थित म्यांमार (मूलनाम ब्रह्मदेश, अंग्रेजों द्वारा दिया गया नाम बर्मा) की वर्तमान राजधानी नेपिटो (Neypitaw) है। इसकी पूर्व राजधानी यांगौं (रंगून) तथा उससे भी पहले की राजधानी माण्डले थी।

परकीत भाई तथा बीबी बहन

अंग्रेजों से इसे 4 जनवरी, 1948 को स्वतन्त्रता मिली। इसकी वर्तमान आबादी लगभग 5.5 करोड़ है जिनमें भारतीय 1.5 प्रतिशत हैं। यांगौं में पिछले 18 वर्षों से ओमशान्ति मेडिटेशन सेन्टर चल रहा है जो शाइन टावर के नौवें माले पर स्थित है। लगभग 125 लोगों के बैठने की सुविधा वाला इसका सभागार सुव्यवस्थित तथा सुविधा सम्पन्न है जहाँ सुबह-शाम नियमित रूप से लगभग 35 भाई-बहनें राजयोग का अभ्यास करते हैं। ये सभी भारतीय मूल के हैं और अलग-अलग व्यवसायों से जुड़े हुए हैं। चर्चा के दौरान उन्होंने राजयोग के अभ्यास से हुई प्राप्तियों का हृदयग्राही वर्णन किया।

कुमारी लक्की 2001 से राजयोग का अभ्यास कर रही हैं, भारतीय दूतावास में असिस्टेंट, प्रोपर्टी की पोस्ट पर सेवारत हैं, वे बताती हैं, राजयोगी बनने से पहले मन की स्थिति ऐसी थी कि कोई, कुछ भी कह देता तो दुखी हो जाती थी और घर में आकर रोती थी। कार्यालय में मेरी मेहनत को देखकर अधिकारीगण सम्मान करते पर स्टाफ के अन्य सदस्य ईर्ष्या करते थे, अनेक प्रकार से तकलीफें देते थे, तब भी मैं रोती थी पर कभी उनसे झगड़ा नहीं करती थी। राजयोग से इतनी शक्ति मिली कि दुख और रोना बन्द हो गया। मुझे समझ में आ गया कि मेरा कर्मों का खाता चुक्ता हो रहा है। पहले मांसाहारी थी पर परमात्मा पिता की

कमाल है कि राजयोग-कोर्स के तुरन्त बाद मैं शाकाहारी हो गई। कार्य की अधिकता के कारण मुझे चिड़चिड़ापन रहता था लेकिन अभी इतना अन्तर आ गया है कि कोई कर्मचारी छुट्टी पर चला जाए और अधिकारी मुझे उसकी सीट का काम दे दें तो मैं खुशी-खुशी कर लेती हूँ। दूसरी के साथ-साथ कभी-कभी तीसरी सीट भी सम्भाल लेती हूँ। मुझे अनुभव होता है कि जैसे बाबा ही सब कार्य कर रहे हैं और मैं हल्की रहती हूँ। कभी कोई मैटर लिखना होता है तो बाबा को कहती हूँ, बाबा लिखवा दो। उस लिखे हुए को जब अधिकारी को दिखाती हूँ तो कहते हैं, बहुत अच्छा लिखा है। राजयोग द्वारा मुझे परमात्मा पिता की हर प्रकार से मदद मिलती है।

पिछले तीन सालों से राजयोगी, दाल कमीशन एजेन्ट कुमार रामसुन्दर अपना अनुभव इस प्रकार सुनाते हैं, राजयोग के अभ्यास से मैं 1) निरोगी बन गया हूँ; 2) मन शान्त रहने लगा है; 3) गुस्सा कम हो गया है; 4) व्यापार में सफलता मिली है; 5) पाप कर्मों से बचने और पुण्य कर्मों को बढ़ाने का ज्ञान मिला है, खुशी के साथ-साथ सहनशक्ति भी बढ़ गई है।

पेशे से शिक्षिका कुमारी सुषमा पिछले 14 साल का राजयोग का अनुभव सुनाते हुए बताती हैं कि राजयोग के अभ्यास से आत्मविश्वास बढ़ा है, अपने मूल्य और उपयोगिता को पहचाना है। कन्या जीवन पर गर्व होता है इसलिए कि भगवान ने राजयोग का ज्ञान जन-जन तक पहुँचाने का ज्ञान-कलश माताओं-बहनों को दिया है। परमपिता परमात्मा एक हैं, इस सत्यता का बोध हुआ है। सर्व के प्रति सकारात्मक सोचना सरल हो गया है। कोई भी समस्या आने पर अपने को डिस्टर्ब किए बिना सहजता से पार हो जाती हूँ।

डालर का व्यापार करने वाले दो वर्ष से राजयोगी कुमार संजय कहते हैं, जो सिरदर्द पहले दवा लेने पर कन्ट्रोल होता था, राजयोग के अभ्यास से स्वतः गायब हो गया है। व्यर्थ और बुरे संकल्प चलने बन्द हो गए हैं। थोड़ा-सा पुरुषार्थ करने पर ही परमात्मा पिता की बहुत बड़ी मदद का अनुभव होता है। चंचल मन स्थिर हो गया है। पहले बहुत पाने की इच्छाएँ थी, अब इच्छाएँ समाप्त हो गई हैं, अच्छा बनने की लगन लग गई है।

पिछले 15 वर्षों से राजयोग की अभ्यासी गृहिणी सुलोचना वर्मा कहती हैं, राजयोग के द्वारा जो खुशी मिली है, वह पहले अप्राप्त थी। विघ्नों और समस्याओं में परमात्म-शक्ति के सहयोग का अनुभव होता है। पारिवारिक फर्ज आसानी से निभा लेती हूँ और बीमारी में भी मन हलचल से परे परमात्म-स्मृति का अनुभव करता रहता है।

गृहिणी सावित्री बहन को 15 वर्ष के राजयोग के अभ्यास से यह लाभ हुआ कि गुस्सा खत्म हो गया, मन की भटकन समाप्त होकर, एक शिव परमपिता परमात्मा में ध्यान एकाग्र करना आ गया, सब आत्माओं प्रति आत्मिक प्यार बढ़ गया, भय समाप्त हो गया।

गृहिणी उर्वशी बहन बताती हैं कि ऑपरेशन की बजाय राजयोग के अभ्यास से बीमारी नियन्त्रण में आ गई है।

कुमारी सोनम पिछले 6 वर्षों से राजयोग की अभ्यासी हैं, बताती हैं, जब से राजयोगी बनी हूँ, पुराने संस्कार, पुरानी चाल-चलन, क्रोध, अहंकार छूट गए हैं। नए स्वभाव से विश्व को नया बनाने का दृढ़ संकल्प लिया है।

कुमारी बसन्ती राजयोग शिक्षिका हैं, पिछले 6 वर्षों से राजयोग की प्राप्तियों का अनुभव सुनाती हुई कहती हैं, हर आत्मा के साथ संस्कार मिलाकर चलना, हर परिस्थिति में खुद खुश रहना और सबको खुश रखना तथा सत्य और असत्य को परखना सीख गई हूँ।

ग्रेजुएट कुमारी मुन्नी 6 वर्षों से राजयोगी हैं, बताती हैं, अनेक शारीरिक बीमारियों से तंग होकर मैं जीना नहीं चाहती थी पर राजयोग के अभ्यास से बीमारी को सहने और खुशी से शारीरिक हिसाब चुक्ता करने की शक्ति

आई है। मन को शान्ति मिली है।

एजेन्ट उदयचन्द को मात्र एक वर्ष के राजयोगी जीवन में आर्थिक लाभ हुए हैं, घर में सुख-शान्ति बढ़ी है। परमात्म-निश्चय से बिना घबराहट के परिस्थितियों से पार हो जाते हैं।

दाल मिल के मालिक सुन्दर कुमार वर्मा कहते हैं, राजयोग के अभ्यास से सही निर्णय करना आया है, मन हल्का रहता है, परमात्म-स्मृति विकारों से बचा लेती है।

पशु आहार निर्माता सुभाष भाई अगस्त, 2011 से राजयोगी हैं, हृदयरोग का इलाज ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उन्हें नेट पर ब्र.कु. शिवानी बहन के प्रवचन मिले, जिनमें हृदयरोग के कारणों और निवारण का ज्ञान मिला। राजयोग के अभ्यास से अब उनके सब ब्लॉकेज खुल चुके हैं। पहले पैसे के पीछे भागते थे, अब ईश्वरीय सेवा पहले और व्यापार बाद में हो गया है।

यांगौं से 146 कि.मी.दूर जियावाड़ी नाम का स्थान है। ब्रिटिश शासन काल में सन् 1892 से 1902 के बीच भारत के बिहार प्रान्त के आरा, छापरा, बलिया, पटना जिलों से लाए गए किसान यहाँ बसे हैं जिनकी संख्या उस समय 4000 थी। अब इनकी चौथी-पाँचवीं पीढ़ी चल रही है और संख्या करीब दो लाख हो चुकी है। बिहार प्रान्त के डुमराव के महाराजा को ब्रिटिश सरकार से, हर प्रकार की मदद करने के एवज में 20000 एकड़ जंगली जमीन 99 वर्ष के पट्टे पर मिली थी। उनके दिवान राय बहादुर हरिप्रसाद सिंह ने इन किसानों को बसाया था। जियावाड़ी क्षेत्र में भारतीय मूल के लोगों के लगभग 150 गाँव बसे हैं। यहाँ की भाषा भोजपुरी और हिन्दी है। रहन-सहन, पहनावा, संस्कृति सब पूरी तरह भारतीय है।

इन्हीं 150 गाँवों के समूह के बीच 35 गाँवों में ब्रह्माकुमारीज़ पाठशालाएँ चलती हैं। फ्यू कस्बे के नजदीक विष्णुपुर (नौकाया) गाँव में राजयोग भवन मुख्य सेवाकेन्द्र है जहाँ 20 समर्पित कन्याएँ रहती हैं। सेवाकेन्द्र तथा पाठशालाओं में क्लास करने वाले भाई-बहनों की संख्या 300 और कन्याओं की संख्या लगभग 150 है।

विष्णुपुर की समर्पित व सेवाधारी ब्र.कु. बहनें

चौतगा, माण्डले तथा जियावाड़ी कस्बे में भी सेवाकेन्द्र खुले हैं जहाँ दो-दो बहनें रहती हैं। भवन निर्माण, गाड़ी चलाना, भोजन बनाना, सेवा के प्रोग्राम बनाना, सेवाकेन्द्र की गऊशाला सम्भालना – आदि सभी काम कन्याएँ मिलजुल कर लगन से करती हैं। भारतीय भाई-बहनों की राजयोग के प्रति बढ़ती रुचि को देखते हुए वहाँ 220 फीट लम्बा और 80 फीट चौड़ा सभागार निर्माणाधीन है। टेक्नीकल जानकारी वालों से मार्गदर्शन लेकर भवन के लिए ईंटें बनाना, पिल्लर के लिए गड्ढे खोदना, पिल्लर का लोहे का ढाँचा तैयार करना – ये सब काम कन्याएँ स्वयं करती दिखाई दीं। इन सबको करते हुए अमृतवेले, प्रात:क्लास में तथा दिन की क्लासेस में भी उनकी पूर्ण उपस्थिति देखने को मिली। आने वाले 3 महीनों में सभागार को पूर्ण निर्मित कर दादी जानकी के कर-कमलों से उसका उद्घाटन करवाने की शुभ इच्छा उनमें हिलोरें लेती दिखाई दी।

उपरोक्त तथा अन्य अनेक दिव्य अनुभवों से भरपूर होकर 5 मई, 2016 को अविनाशी खण्ड भारत के महातीर्थ आबूरोड, शान्तिवन की भूमि पर आकर पुन: ईश्वरीय सेवा में रत हो गई। इन सब अनुभवों की प्राप्तियों के लिए परमपिता परमात्मा शिव का कोटि-कोटि धन्यवाद! ❖

राजयोग के प्रयोग

❍ ब्रह्माकुमार योगेश्वर कुमार, सिकंदराबाद

मैं पिछले 26 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान में हूँ। बचपन से ही शिवालय जाकर रोज जल चढ़ाने का नियम था। यह नियम वर्ष 1996 में आई.आई.टी., दिल्ली में B.Tech (इंजिनियरिंग) में दाखिला होने के बाद बंद हो गया था। मैंने 1978 में एम.बी.ए. किया था। मुझे भारतवर्ष में बी. ए. आर. सी, मुंबई में वैज्ञानिक के पद पर, ई.सी.आई.एल., हैदराबाद में कंप्यूटर इंजीनियर और आंध्रा बैंक में महाप्रबन्धक के रूप में सर्विस करने के बाद 2003 में नाइजीरिया (अफ्रीका) सरकार का तकनीकी सलाहकार बनने का अवसर मिला। वहाँ ब्र.कु.रेवा बहन, सेन्टर इन्चार्ज, लेगोस (नाइजीरिया) का बहुत सहयोग मिला। मेरे पास पावर, पोजिशन एवं पैसा सब कुछ था, 5 वर्ष पूरे हो गए थे परन्तु इच्छानुसार आध्यात्मिक पुरुषार्थ नहीं हो रहा था इसलिए कॉन्ट्रैक्ट पूरा होने से 3 वर्ष पहले ही, वर्ष 2008 में इस्तीफ़ा (VRS) देकर भारत वापिस आ गया।

संकल्प शक्ति के प्रयोग

मैं तीव्र पुरुषार्थ पर हर लेक्चर सुनता हूँ (क्लास में अथवा कंप्यूटर पर), डायरी में नोट करता हूँ और तीव्र साधना के साथ-साथ दैनिक जीवन में भरपूर योग का प्रयोग कर रहा हूँ, कुछ प्रयोगों का वर्णन निम्नलिखित है–

बीमारी हुई ठीक

मेरी युगल को पैरों में सोरायसिस (Psoriasis) की बीमारी थी, उसका इलाज नहीं हो पा रहा था। कुछ रोज अमृतवेले के समय मैंने एक गिलास पानी को इन संकल्पों से चार्ज किया, 'सर्वशक्तिमान बाबा की शक्तियों की किरणें मुझ आत्मा में समाती जा रही हैं और मेरी आँखों से निकलकर मेरे सामने रखे पानी को चार्ज कर रही हैं जिसके कारण पानी शक्तिशाली दवा बनता जा रहा है।' फिर इस पानी को पैरों में लगाने से इतना फायदा हुआ कि अब दोनों पैर ठीक हैं।

उम्र के मुताबिक शरीर के विभिन्न अंगों में दर्द होना स्वाभाविक है। मैं रोजाना सुबह-शाम 45 मिनट्स अपने कंपाउंड में टहलता हूँ। जब भी घुटनों, कन्धों अथवा पसलियों में दर्द होता है तो योग का प्रयोग कर लेता हूँ कि 'बाबा की शक्तियों की किरणें मुझ आत्मा में समा कर भ्रकुटि से पैरों तक मेरे पूरे शरीर में फ़ैल रही हैं।' इसमें अपना ध्यान पूरी तरह केन्द्रित करके किरणों का प्रवाह शरीर के हर भाग में गुजरते हुए visualise करता हूँ। प्रभावित अंग पर विशेष ध्यान देता हूँ कि वह नार्मल होता जा रहा है। टहलने के दौरान 2 से 3 मिनट में ही बिलकुल ठीक हो जाता हूँ। मुख्य यह निश्चय है कि मेरा दर्द समाप्त हो रहा है, अनुभवी होने के कारण मेरा निश्चय अटल हो गया है।

सम्मान देने से सम्मान की प्राप्ति

हमारे कॉम्प्लेक्स में एक आत्मा को सभी मनुष्य अभिमानी कहते हैं, वह किसी को हैलो भी नहीं करता है। मुझे बाबा की श्रीमत 'सम्मान देना अर्थात् सम्मान लेना' याद आई और मैंने रोजाना टहलते समय उसको हैलो करना शुरू किया, दो दिन के बाद ही उसमें इतना परिवर्तन आया कि वह मुझे जब भी मिलता है, झुककर हैलो करता है, मेरी युगल भी आश्चर्य में है।

शुद्ध भोजन का प्रभाव

मेरी एक बुआ मुरादाबाद में रहती हैं। एक पारिवारिक स्नेह मिलन में उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मैंने शादी की पार्टी का भोजन न खाकर युगल द्वारा पकाया भोजन एक तरफ बैठकर ले लिया। उनके पूछने पर मैंने संक्षिप्त में

उन्हें भोजन की शुद्धि के बारे में बताया। लगभग 10 मास के बाद वह हमें मधुबन में मिलीं और बताया कि मुझे उस पारिवारिक मिलन के बाद ब्रह्मा बाबा के कई साक्षात्कार हुए। उसके बाद मैंने ज्ञान सीखकर अपने घर में ही एक गीता पाठशाला खोल ली है और अब अन्य बहनों के साथ अव्यक्त बापदादा से मिलने आई हूँ।

वर्ष 1995-1996 में जोनल मैनेजर (Zonal Manager) की हैसियत से मैं आन्ध्रा बैंक की जमशेदपुर शाखा का निरीक्षण करने गया। उस शाखा के प्रबन्धक के साथ मैंने सेन्टर पर ब्रह्मा भोजन किया। सेन्टर के भाई-बहनों के नि:स्वार्थ एवं प्रेमपूर्वक व्यवहार से हमारा वो प्रबन्धक बहुत प्रभावित हुआ। यह बात मुझे तब पता चली जब उसने मधुबन जाने के लिए 10 दिन की छुट्टी के लिए मुझे प्रार्थना-पत्र भेजा। मेरे फ़ोन करने पर उसने बताया कि वह भी बाबा का बच्चा बन गया है।

भय और लोभ से बचाया बाबा ने

सन् 1990 में मैं आन्ध्रा बैंक, मुंबई में मुख्य शाखा का मुख्य प्रबन्धक था। हर्षद मेहता, उस समय का नामीग्रामी सट्टेबाज मेरी शाखा का ग्राहक था। बैंकों के चेयरमेन उसको बहुत इज्जत देते थे। एक दिन उसके ऑफिस/घर पर सी.बी.आई. पहुँच गयी और बैंक लॉकर की चाबी ले गयी। दूसरे दिन सुबह ही वह मेरे ऑफिस में आया और लॉकर की डुप्लीकेट चाबी बनवाने के लिए मेरी मदद मांगी। इस मदद के लिए उसने मुझे मुँह-मांगा पैसा देने की पेशकश की। उसकी मदद करना बैंक के नियमों के खिलाफ था। ऐसी हालत में मैंने बाबा को एवं बाबा की श्रीमत (बाबा साथी है इसलिए निर्भय एवं लोभमुक्त रहना) को याद किया और हिम्मत करके मना कर दिया। वह बहुत क्रोध में आकर चला गया। बाद में उसे जेल की सज़ा हुई, कोर्ट ने उसकी सारी संपत्ति नीलाम की और फिर उसकी मृत्यु हो गयी। इस प्रकार बाबा की श्रीमत ने मुझे भयभीत होने या लोभग्रस्त होने से बचाया।

घेराव में भी तनाव रहित स्थिति

सन् 1994 में बैंक में मेरी पदोन्नति हुई और मुझे असिस्टेंट जनरल मैनेजर (ईस्टर्न जोन इन्चार्ज) बनाकर यह हिदायत दी गयी कि ईस्टर्न जोन में व्याप्त लेबर यूनियन की अनुशासन-हीनता को समाप्त कर जोन में बिजनेस को बढ़ाना है। यह ऐसा समय था जब कोई भी मैनेजर, यूनियन के आये-दिन के घेराव/हड़ताल के कारण ईस्टर्न जोन में जाने से घबराता था। मेरे ज्वाइन करने के कुछ दिनों के बाद ही यूनियन के लगभग 55 सदस्यों ने शाम को जोनल ऑफिस में मेरा घेराव कर लिया और अपनी मांगों की एक लिस्ट मेरे सामने रख दी और कहा कि ये मांगें आज और अभी ही पूरी करनी होंगी अन्यथा पूरी रात घर नहीं जाने देंगे। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि उनकी उचित मांगों को पूरा किया जाएगा परन्तु घेराव के दबाव में कभी नहीं। दबाव डालने के लिए उन्होंने मेरी कुर्सी खींच ली और नारे लगाना शुरू कर दिया, मैं अपने चीफ मैनेजर एवं पर्सनल मैनेजर के साथ फर्श पर बैठ गया और अपने शिव बाबा की याद में खो गया। उसी समय कोलकाता की निमित्त ब्रह्माकुमारी बहन का फ़ोन आया और उन्होंने मुझे समझाया कि मैं किसी तनाव में ना आऊँ और वे सब मिलकर सेन्टर से मुझको योगदान देंगे। बाबा की मदद के कारण मेरा शांत एवं तनाव-मुक्त चेहरा देखकर यूनियन वाले आश्चर्यचकित हो गए और घेराव खत्म करके चले गये। कोलकाता में मेरे दो वर्ष के प्रवास में यह पहला और आखिरी घेराव था। इन दो वर्षों में बैंक बिज़नेस डबल हो गया एवं जोन में पहली बार अनुशासन दिखाई दिया। वास्तव में बाबा की मदद से हमने उन दिनों में बैंक की न्यू अलीपुर शाखा में सन्डे बैंकिंग (Sunday Banking/all 7 days banking) आरम्भ की जिसका उद्घाटन हमारी ब्रह्माकुमारी निर्मलशांता दादी ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। यह बंगाल में बैंकिंग उद्योग में, यूनियन के विरोध के बावजूद, पहला सफल प्रयोग था।

हिम्मत से परिस्थिति का सामना

सन् 1997 में, बैंक के नये चेयरमैन को मेरी ईमानदारी एवं पारदर्शिता पसंद नहीं आई और अपने एक स्वार्थ के कारण मुझे धमकी दे डाली कि मुझे अगला प्रमोशन (AGM से DyGM) नहीं मिलेगा। इंटरव्यू कमेटी में तीन सदस्य होते हैं, एक रिज़र्व बैंक से, दूसरा वित्त मंत्रालय से एवं तीसरा बैंक का चेयरमैन, जो कमेटी का अध्यक्ष भी होता है। ऐसी स्थिति में प्रमोशन मिलना नामुमकिन था। मैंने ब्र.कु. वन्दना बहन (माटूंगा (मुम्बई) सेन्टर की इन्चार्ज) से सलाह ली कि क्यों ना मैं इंटरव्यू मिस कर दूं अर्थात् जाऊं ही नहीं। बहन ने कहा कि ब्रह्मा बाबा ने कभी हिम्मत नहीं हारी इसलिए आपको इंटरव्यू में जाकर बाबा को याद कर परिस्थिति का सामना करना है। पहली बार (एक तरफ) चेयरमैन और (दूसरी तरफ) दो सदस्यों के बीच में दो मास तक मेरे काम को लेकर खूब खींचातानी हुई। फिर चेयरमैन को झुकना पड़ा और 1997 में मुझे AGM से DyGM का प्रमोशन और 1999 में DyGM से GM (जनरल मैनेजर) का प्रमोशन मिला।

बाप से सच्चे प्यार का फल

यह बात है 1989-1990 की। मैं और मेरी लोकिक माँ गामदेवी (मुंबई) सेंटर पर जन्माष्टमी मना रहे थे। अचानक शील दादी सीट से खड़ी होकर नाचने लगी। सबने कहा कि श्रीकृष्ण की आत्मा ने प्रवेश किया है। मैं जमीन पर बैठा दादी का डांस देख रहा था। मेरी भी इच्छा हुई डांस करने की और मैंने बाबा से मन में कहा, बाबा, अगर मेरा आप से सच्चा प्यार है तो मैं भी दादी के साथ डांस करूँ। अचानक शील दादी मेरे सामने आकर खड़ी हो गई और अपने हाथ से मुझे बुलाया, आ जा। मुझे विश्वास नहीं हुआ, तो दादी ने मुझे दोबारा बुलाया। मैं उठा और दादी के साथ खूब नाचा। बाद में दादी ब्र.कु. उषा बहन की गोद में बच्चा बनकर समा गयीं। मैं उस समय अपने खुशी के आँसू रोक नहीं पाया, जो वह घटना याद आने पर अब भी आ जाते हैं। ❖

ए खुदा दोस्त!

ब्रह्माकुमारी ऊषा ठाकुर, मीरा सोसाइटी, पूना

किन शब्दों में करूँ मैं धन्यवाद तुम्हारा,
ए खुदा! आया तू बनके दोस्त जो हमारा।
किन शब्दों में करूँ.......

सोचा भी ना था, कभी हमको तू मिलेगा,
अंगुली पकड़ के मेरी, साथ भी चलेगा,
पाया है अपने सामने, जब-जब भी पुकारा।
ए खुदा! आया तू.......

माया की दलदलों से तूने हमें निकाला,
जीवन के अंधेरे में फैला दिया उजाला,
मुश्किल की हर घड़ी में देते हो सहारा।
ए खुदा! आया तू.......

तन, मन, ये विनाशी धन तुझ पर किया है अर्पण,
प्यारे दोस्त! तुम पर जीवन किया समर्पण,
लौट के ना आये वक्त ये दोबारा।
ए खुदा! आया तू.......

दे हाथ तेरे हाथ में निश्चिन्त मैं चला,
आपे ही टल गई है, दुनिया की हर बला,
तूफाँ में भी दिखाये तू जन्नत का नजारा।
ए खुदा! आया तू.......

अब तो ना कोई डर है, ना है कोई फिकर,
भगवान ही जब साथ चले बनके हमसफर,
जीवन की नाव को मिल जायेगा किनारा।
ए खुदा! आया तू.......

ज़िन्दगी के बैंक में जब 'प्रेम' का बैलेंस कम हो जाता है तब सुख के चैक बाउंस होते हैं

सुखी गृहस्थ जीवन में राजयोग का महत्व

❍ ब्रह्माकुमार सत्यनारायण साहू, ललितपुर (म.प्र.)

मेरा जन्म 28 नवम्बर, 1973 को जिला ललितपुर में हुआ। आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण बहुत अभावों में पला-बढ़ा। हाईस्कूल में पढ़ते-पढ़ते ही मैं खुद पढ़ाने भी लगा और आगे की शिक्षा इन्टर, बी.कॉम., एल.एल.बी. तक की और कोर्ट में प्रैक्टिस करने लगा। प्रारम्भ से ही पूजा-पाठ, व्रत-उपवास बहुत करता था। गुरु, साधु, सन्त भी बहुत मिले लेकिन किसी को साथी नहीं बनाया। मन में विचार आते थे कि जब योग्य व्यक्ति मिलेगा, उसे गुरु बनाऊँगा।

भय था कि कहीं गलत जगह न फँस जाऊँ

एक दिन एक सेवाकेन्द्र के आगे से गुजरा जहाँ बोर्ड पर लिखा था प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। मन में विचार आया, यह कैसा ईश्वरीय विश्व विद्यालय है? यहाँ पर क्या पढ़ाया जाता होगा? कौन पढ़ाता होगा? यह किस प्रकार की पढ़ाई है? सन् 1998 में एक भाई से मुलाकात हुई, सम्पर्क बढ़ा तो एक दिन वे इस विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में ले गये, बहनों से परिचय करवाया लेकिन मुझे निश्चय नहीं बैठा। मन में यह भय था कि कहीं गलत जगह न फँस जाऊँ। फिर सेवाकेन्द्र पर कभी-कभी जाना होता रहा। एक दिन उस भाई ने कहा, माउन्ट आबू में प्रोग्राम है, आपको चलना है। मैंने फट से मना कर दिया कि मेरे पास इतना समय नहीं है जो इस कार्य के लिये बेकार कर दूँ। उन्होंने फिर थोड़ा जोर देकर कहा, आपको चलना ही है तो दोस्ती की खातिर मैंने हाँ कर दी और माउन्ट आबू का प्रोग्राम बन गया।

अपने को बदलने का दृढ़ संकल्प

आठ मई, 2008 जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण दिन था जब माउन्ट आबू की पवित्र भूमि पर अपने कदम रखे। परिसर में प्रवेश करते ही यह महसूस हुआ कि आत्मिक शान्ति के लिये दुनिया में इससे अच्छी कोई दूसरी जगह हो ही नहीं सकती। दूसरा दिन फिर घूमने-फिरने में निकल गया। तब तक मन में यही विचार था कि किसी धर्मात्मा सेठ ने घूमने-फिरने हेतु यह स्थान बनवा दिया है। लोग घूम-फिर कर चले जाते होंगे। तीसरे दिन जब राजयोग पर क्लास सुनी तब मेरी बुद्धि का ताला खुला। फिर निरंतर क्लास अटेन्ड की और अहसास हुआ कि जीवन की वास्तविकता आखिर है क्या और मैं अभी तक अंधकार में ही था। तभी दृढ़ संकल्प कर लिया कि अब मुझे शीघ्र से शीघ्र अपने आप को बदलना है।

शिवबाबा को बनाया सच्चा गुरु

ललितपुर वापिस आकर मैंने सेवाकेन्द्र प्रभारी बहनों से विस्तार से राजयोग की शिक्षा ली। मन में अनेक प्रश्न उठते रहे और बहनों से बड़ी ही सहजता से उत्तर मिलते रहे। निमित्त बहनों के माध्यम से शिवबाबा को मैंने अपना सच्चा गुरु एवं पथ-प्रदर्शक मान लिया। राजयोग का अध्ययन करने पर मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि इस शिक्षा की वर्तमान समय सभी को बहुत आवश्यकता है क्योंकि घर-घर में अशान्ति एवं निराशा है जो राजयोग से ही दूर की जा सकती है। राजयोग की शिक्षा से हम अपने परिवार, समाज व राष्ट्र को खुशहाल बना सकते हैं।

राजयोग से हुई प्राप्तियाँ

1. आत्मविश्वास में बहुत वृद्धि हुई। कैसी भी परिस्थिति आती है तो अब मैं विचलित नहीं होता हूँ।
2. जीवन में खुशियाँ बहुत बढ़ गई हैं। हर हाल में बहुत खुश रहता हूँ। जीवन में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश हुआ है।
3. हमेशा यह ध्यान रहता है कि दूसरों को खुशी और संतुष्टि देनी है।
4. दूसरों की मदद करने का भाव जाग्रत हुआ है, सहनशीलता में वृद्धि हुई है। देश और समाज के प्रति

कर्त्तव्यनिष्ठ हुआ हूँ।

5. अच्छे धन एवं बुरे धन का जीवन में क्या प्रभाव पड़ता है, यह भी मैंने सीखा और वकालत का धन्धा छोड़ दिया।

6. इस शिक्षा के पहले मेरा अपनी पत्नी के विचारों से बहुत मतभेद रहता था। इस कारण आये दिन मनमुटाव एवं तनाव का माहौल बन जाता था। राजयोग की शिक्षा से आज हम दोनों का जीवन बहुत सुखी है। हम दोनों ने एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करना शुरू कर दिया तो सारा तनाव खत्म हो गया। जीवन में सात्विकता एवं पवित्रता का समावेश हो गया।

आत्मविश्वास बिल्कुल भी नहीं खोया

एक घटना 13-11-2015 की है। मैं अपनी पत्नी के साथ एक रिश्तेदारी में बाइक से जा रहा था। मेरे आगे एक अन्य बाइकसवार जा रहा था। उसने एक बहन को टक्कर मार दी। उसकी बाइक तेजी से फिसली, उसके पीछे मेरी बाइक भी फिसली। उसी के साथ मेरी पत्नी फिसली और मैं भी 10 फीट दूर जाकर गिरा। फिर बाबा एवं राजयोग की शिक्षा का कमाल देखिए, हम दोनों को थोड़ी-सी चोटें आयीं। दूसरी बाइक वाला बहुत बुरी तरह से घायल हो गया था, उसे हॉस्पिटल ले जाया गया। हम दोनों बाइक से 18 कि.मी.वापिस अपने घर लौट आये और अपना आत्मविश्वास बिल्कुल भी नहीं खोया। आज हम एकदम स्वस्थ हैं और नियमित रूप से क्लास करते हैं। मैंने परमपिता शिवबाबा से जो कुछ पाया उसे कभी भूल नहीं सकता। शिवबाबा को बहुत-बहुत धन्यवाद जो हमारे जीवन की इतनी अच्छी संभाल कर रहे हैं। ❖

पुरानी बुरी आदत से छुड़ाया बाबा ने

ब्रह्माकुमार प्रेमशंकर, लखीमपुर, शान्तिनगर

मेरा लौकिक जीवन बहुत ही सुखमय चल रहा था, मिठाई की दुकान भी बहुत अच्छी चल रही थी। एक बार होली के त्यौहार पर कुछ जान-पहचान वालों ने शराब पीने के लिए कहा लेकिन मैंने नहीं पी। फिर कसम देकर कहा, आज होली है, थोड़ी-सी पीने से कुछ नहीं होता। उस दिन पीने से शराब ने ऐसा बना दिया कि अपनी सारी कमाई से मैं शराब पीने लगा। दूसरों से उधार लेकर भी शराब पीने लगा। फिर एक दिन नशे में 10 रुपये का एक लाटरी का टिकट खरीदा और 100 रुपये का इनाम निकल आया। फिर रोज लाटरी खेलने लगा, पान, पुड़िया, सिगरेट, तम्बाकू भी खाने-पीने लगा और नशे की आदत इतनी बढ़ गयी कि दुकान बन्द हो गई।

किसी भी मन्दिर में जाता, तीर्थों पर जाता, रामायण पढ़ता, हवन आदि करता तो भी साथ में शराब रखता और थोड़ी-थोड़ी पीता। मेरी पत्नी ईश्वरीय ज्ञान में 3 साल से चल रही थी। उनका अलौकिक जन्मदिन 26 सितम्बर, 2011 को पड़ा, उस दिन हमको भी आश्रम ले गयी। मैं पहली बार गया था, वहाँ के भाई-बहनों को देखा तो बहुत अच्छा लगा। दीदी जो सुना रही थी वह तो समझ में नहीं आया लेकिन बाबा के गीत बहुत अच्छे लगे। भोग बंटने लगा, हमने भी भोग लिया। दीदी की दृष्टि से ऐसी रोशनी मिली, उसी दिन से जीवन में परिवर्तन शुरू हो गया। आज ज्ञान में चलते 3 साल हो गये हैं। तीन बार बाबा से मिलन मनाने मधुबन गया हूँ और मुरली क्लास करता हूँ। आज तक मुरली कभी भी मिस नहीं की है। बाबा ने हमें सब कुछ दे दिया है। घर पर बाबा का एक कमरा बनाया है। शाम को रोज मुरली क्लास कराता हूँ, आस-पड़ोस के लोग भी मुरली सुनने के लिए आते हैं। बाबा ने 35 साल पुरानी नशे की आदत व अन्य गलत कर्मों से छुड़ा दिया। हमारा सभी भाई-बहनों से अनुरोध है कि ज्ञानामृत अवश्य पढ़ें जिसमें भाई-बहनों के अनुभव दिये हुए होते हैं। भाई-बहनों से अनुरोध है, संगदोष में कभी नहीं पड़ें। बाबा की तीन बातें हमेशा याद रहती हैं, 1.सुबह की मुरली सुनना, 2.सेवाकेन्द्र की सेवा करना, 3.शाम को बाबा से योग लगाना। यही गीत गाता हूँ, 'तुमसा हसीन बाबा कोई नहीं जहाँ में, तुमने हसीं बनाया हमको भी इस जहाँ में।'

एक कदम राजयोग की ओर

❍ ब्रह्माकुमार जसबीर सिंह (कैप्टन), कठुआ (जम्मू-कश्मीर)

मेरा जन्म 15 दिसंबर, 1977 में एक छोटे पहाड़ी गाँव लड़ोली (जिला कठुआ, जम्मू) में हुआ। मेरे पिता जी सेना में नौकरी करते थे जिस कारण मुझे अपनी शिक्षा उनके साथ-साथ रह कर पूरी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। शुरू से ही धार्मिक रुचि होने के कारण मैं अक्सर पूजा, पाठ, यज्ञ, हवन और धार्मिक कर्मकांड करता था, मुझे ये संस्कार माता जी से प्राप्त हुए, वे भी काफी धार्मिक स्वभाव की थी। धीरे-धीरे मेरी रुचि महाभारत, रामायण और शिव महापुराण में बढ़ती गई। कई बार रामायण पढ़ने और धार्मिक स्थानों के दर्शन करने के पश्चात् पढ़ाई में मन नहीं लगता था, घंटों कमरे में बैठ तपस्या करता था। सुबह जल्दी उठकर, नहा-धो कर धूप-बत्ती आदि करता रहता और कहीं भी अगर कोई धार्मिक कर्मकांड होता तो हिस्सा ले लेता था। जाति से ब्राह्मण न होने पर भी हवन-यज्ञ आसानी से करवा लेता था। एक समय तो ऐसा आया कि माता-पिता को भय लगने लगा कि कहीं यह साधु तो नहीं बन जाएगा? मेरा झुकाव धर्म की ओर अधिकाधिक बढ़ता गया परन्तु इसका परिणाम यह होने लगा कि छोटी-छोटी बातों पर मैं क्रोधित हो उठता। अगर कोई रामायण, महाभारत या किसी भी शास्त्रीय पात्र पर व्यंग करता तो मैं लड़ाई कर बैठता।

गुस्सा और चिड़चिड़ापन बढ़ता गया

शास्त्रों तथा धार्मिक बातों के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न मेरे मन में भी उत्पन्न होते थे जिनका उत्तर ढूंढ़ नहीं पाता तो पंडितों से पूछता मगर वो भी जब स्पष्ट उत्तर नहीं दे पाते तो व्याकुल होता रहता। कुल मिलाकर एक अंधेरी डगर पर रोशनी की खोज करता और स्वयं ही उत्तर खोज कर संतुष्ट रहने की कोशिश करता। मैंने अनेक यात्राएँ कीं, अमरनाथ गुफा तक नंगे पाँव बर्फ में चला, माता दुर्गा के भवन तक पैदल यात्राएँ कीं, इससे थोड़ा स्वयं को संतुष्ट रखता कि मुझे प्राप्ति हो रही है परन्तु फिर वही स्थिति हो जाती। यह दौड़ कई वर्षों तक लगाता रहा। मेरा गुस्सा, चिड़चिड़ापन बढ़ता गया, स्वयं को श्रेष्ठ समझने लगा, दूसरों के विचारों को मान नहीं दे पाता था। यहाँ तक कि हठयोग इतना बढ़ गया कि ऊँच-नीच, जाति-पाति को बहुत मानने लगा। मुझे लगने लगा कि परमात्मा पर सिर्फ कुछ का ही हक होता है। खैर, जैसे-तैसे 1999 में ग्रेज्युएशन पूर्ण कर सन् 2000 में मैं सेना में आ गया। यहाँ भी क्रोध के कारण स्थिति बदतर होती जा रही थी। सेना में भी मंदिरों में पूजा-पाठ और पंडितों का कार्य करता रहा। पिताजी ने सोचा कि इसकी शादी कर देते हैं, जिम्मेवारी बढ़ेगी तो मन बदल जाएगा। चूँकि हमारे परिवार में सारे शाकाहारी हैं, पूजा-पाठी हैं अत: ऐसे ही एक परिवार की एक कन्या से, मेरी सहमति से सन् 2004 में शादी हो गई।

गर्वान्वित होकर, जो पास था, सब सुना दिया

ससुराल में शिव का मंदिर पास में ही था तो मुझे बड़ा अच्छा लगा, मैं वहाँ भी ध्यान, पूजा, पाठ करता और स्वयं को श्रेष्ठ समझता। ससुराल वाले मुझे प्रेम करते थे क्योंकि मैं निरर्थक दोस्तों के दायरों से अलग था। एक सीमित सोच के साथ अपने में मस्त रहता था, मुझे धर्म की दौड़ से फुर्सत ही नहीं थी। ससुराल में एक दिन मैंने देखा, युगल के बड़े भाई (महेन्द्र भाई, गाँव बगियाल, पल्ली मोड़) ध्यान लगा रहे हैं, चेहरे पर मुसकराहट है और साथ में भाभी जी भी बैठी हैं। मैं भी उनके साथ बैठ गया। जब उनकी दृष्टि मुझ पर पड़ी तो कहने लगे, आपको देखकर अच्छा लगा, आप

परमात्मा के बारे में हमें बताओ। मैं बड़ा गर्वान्वित हुआ और जो कुछ मेरे पास था, सब सुनाने लगा। वे भी बड़ी गंभीरता से सुनने लगे। जब सारी बातें सुन लीं तो कहा, आपको धार्मिक पुस्तकों का अच्छा ज्ञान है। मैं मन ही मन समझने लगा कि मैं ज्ञानी हूँ, ये भी अब मान रहे हैं।

सहजता से दिये प्रश्नों के उत्तर

शाम को भाई जी फिर योग लगाने बैठे तब मैंने पूछा, अब आप कुछ बताएँ। बड़ी सहजता से वे कहने लगे, मुझे तो भगवान मिला हुआ है, मैं क्या बताऊँ। मैंने कहा, मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा, भगवान कैसे आपको मिलते हैं? वे मुसकराए और कहने लगे, कल सुबह विस्तार से बताऊँगा और ध्यान लगाने लगे। मैं बेसब्री से सुबह का इंतजार करता रहा, सुबह हुई तो उनकी सारी बातें ध्यान से सुनीं जिससे उत्सुकता और अधिक बढ़ गयी। मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर उन्होंने बड़ी सहजता से दिया, मैं अचम्भित हो उठा। इसके बाद, जब भी छुट्टी जाता, नए प्रश्न लेकर जाता और वे समाधान करते। कुछ समय तक इसी तरह चलता रहा। मेरी भक्ति-पूजा का विरोध किसी ने नहीं किया और न ही मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर कोई एतराज उठाया। भाई-भाभी की सहज वृत्ति को देख मैं हैरान होता था। घर के बड़े होने के नाते उन्होंने सारी जिम्मेवारियाँ बड़ी सहजता से निभाईं। कितनी भी समस्या आती, कभी क्रोध या तनाव में नहीं आते थे।

इसी बीच मेरे ससुर जी को कैंसर हुआ। भाई जी ने उनकी बहुत देखभाल की, उनको नहलाना, उनके वस्त्रों को बदलना आदि सभी सेवाएँ स्वयं भाई जी करते थे। सासू माता जी स्वयं कहती थी कि यह श्रवण है। पिछले युग का तप किया हुआ है जो ऐसा पुत्र हमें मिला है। भाई जी सेना से निवृत्त होकर कठुआ में एक कम्पनी के प्रबन्धक हैं। गाड़ी, बंगला सब कुछ होने के बावजूद बहुत साधारण और मिलनसार हैं। उनका प्रभाव घर के हर सदस्य पर है। घर में शान्ति का माहौल है, उनके चेहरे पर खुशी और तेज है। मेरी युगल (तारो देवी) भी अपने भाई की ही तरह शांत, हँसमुख और गंभीर हैं।

बड़ा ऊँचा अनुभव हुआ

तमाम इलाजों के बावजूद ससुर जी का शरीर छूट गया। उस समय मैं कारगिल में तैनात था, मुझे मेरी युगल का फोन आया और सरल भाव से कहने लगी, पिता जी नहीं रहे, आप छुट्टी लेकर आ सकते हैं तो आ जाएँ, नहीं तो अपनी सुविधा अनुसार आ जाना। मैं दुखी हुआ क्योंकि छोटा दामाद होने के कारण वे मुझे विशेष स्नेह देते थे। खैर, कुछ समय पश्चात् मैं छुट्टी लेकर गया तो ससुराल पहुँचते ही मेरे आँसू निकल पड़े पर मैंने देखा मेरी सासू माँ जैसे पहले शांत और हँसमुख होकर मिलती थीं, वैसे ही मिली। भाभी-भाई भी पहले की तरह शान्त मिले। जैसा मैंने अनुमान लगाया था कि स्थिति ठीक नहीं होगी, रोना, चिल्लाना होगा, ऐसा कुछ नहीं था, बड़ा ऊँचा अनुभव हुआ। ये वो शब्द हैं जो मेरी सासू माँ ने कहे, 'बेटा, जो होना था, वह हो गया, हमने अपनी ड्यूटी अच्छी तरह से निभाई। मरते समय आपके ससुर जी ने कहा था, कोई रोना नहीं, हम सबको एक दिन यह देह त्यागनी ही है, मुझे सुकून है, मैंने श्रेष्ठता से अपना जीवन जीया है और सुकून से जा रहा हूँ। आप भी अपने कर्त्तव्य को ऐसे ही श्रेष्ठता से निभाना, रोने से कोई लाभ नहीं।'

मेरी सफलता के पीछे है ब्रह्माकुमारीज़ की जीवन शैली

ये वो घटना थी जिसने मेरी सोच को बदला या यूँ कहें, ईश्वरीय ज्ञान की नींव मेरे अन्दर डाली। फिर मैंने भाई जी से विस्तार से ज्ञान सुना। घर में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की रोज क्लास चलती है, मैं भी रुचि से ज्ञान सुनने लगा। समय बीतता गया, मेरा हठयोग समाप्त हो गया। धीरे-धीरे सब प्रश्नों के उत्तर भी मिलते गए, प्रसन्नता, सन्तुष्टता बढ़ती गई। एकाग्रता बढ़ने के कारण मैं स्वयं को मजबूत बनाता गया। मुझे लगने लगा कि मुझे

अधिकारी की पदवी प्राप्त करने के लिए और पढ़ाई पढ़नी चाहिए। मैंने दो बार परीक्षा दी परन्तु सफलता नहीं मिली पर हिम्मत नहीं हारी, फिर कोशिश की और तीसरी बार सन् 2010 में मुझे सफलता मिली। अब मैं सेना में अधिकारी हूँ और मेरे आचरण से और व्यक्तित्व से सारे प्रभावित हैं और मुझे सेना के विभिन्न यूनिट्स की क्लास में एक वक्ता के रूप में आमंत्रित किया जाता है। मेरे स्वयं के बदलाव और मेरी सफलता के पीछे मेरे द्वारा देखी गई मेरे ससुराल वालों की राजयोगी जीवन शैली है जो ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की देन है जिससे वे पिछले 13 वर्षों से जुड़े हैं।

परमात्मा को पहचान लें तो कुछ भी संभव है

अब नित्य मेरे अनुभव बढ़ते जा रहे हैं। कोई कुछ बुरा कहता भी है या मेरी सोच के विरुद्ध कार्य करता भी है तो क्रोध नहीं आता। अब खुशी, सादगी, दृढ़ता और सहनशीलता भी बढ़ती जा रही है। मेरे माता-पिता, भाई-बहन सब हैरान हैं और मुझे सम्मान देने के साथ-साथ स्वयं भी परमात्मा को पहचान रहे हैं। अब यूनिट में अपने आदेश को मनवाने के लिए मुझे ज्यादा कुछ बोलना नहीं पड़ता, बड़ी सहजता से सारे कार्य हो जाते हैं। कभी-कभी तो हैरानी होती है कि ऐसा कैसे सम्भव हुआ! सच में परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को और उनकी शक्तियों को अगर हम पहचान जाएँ तो कुछ भी सम्भव है। मुझे यकीन है कि मेरे इस जीवन घटना-क्रम से, जो मैंने आपसे साझा किया, आपको जरूर लाभ होगा। जैसे मैंने शिव बाबा से पाया, तो प्यारे भाइयो और बहनो, आप क्यों वंचित रहें! ❖

विकारों के सूक्ष्म अंश की परख

ब्रह्माकुमार शम्भू, सोडाला (जयपुर)

प्यारे बाबा ने हमें सिखाया है कि घर-परिवार में रहते एक-दो के प्रति सम्मान की दृष्टि रखो पर कभी-कभी देह अभिमान वश ऐसी दृष्टि विस्मृत हो जाती है, एक घटना के दौरान मैंने ऐसा महसूस किया। हुआ यूँ कि मेरी बेटी एक दिन ससुराल से हमें मिलने आई। मैंने उसे अपनी कुर्सी पर बैठा दिया और खुद वहाँ रखी चौकी पर बैठ गया। अचानक उसी समय एक आवश्यक कार्य से मुझे नीचे कमरे में जाना पड़ा, जब वापस लौटा तो देखा, मेरी युगल कुर्सी पर बैठ गई थी, बेटी चौकी पर विराजमान थी।

मैं कुछ देर युगल की ओर मुखातिब इस सोच में खड़ा रहा कि वे स्वयं मुझे कुर्सी पर बैठने को कहेंगी पर मैं 10 मिनट प्रतीक्षा करता रहा और माँ-बेटी बातों में मशगूल रहीं। मुझे कुर्सी की प्रतीक्षा के लिए 10 मिनट का समय आधे घंटे जितना महसूस हुआ जो मैंने अन्तत: शब्दों द्वारा अभिव्यक्त कर ही दिया कि आधे घन्टे से मैं खड़ा हूँ, आप में इतना शिष्टाचार भी नहीं है?

इतना कहना था कि उधर से भी अभिव्यक्ति हुई कि ज्ञानी बने फिरते हो और इतनी बड़ी झूठ बोलते हो। फिर मुझे प्रतिदिन के चार्ट का प्रश्न याद आया, 'क्या निर्विघ्न बने हो और दूसरों को निर्विघ्न बनाया है?' इस स्मृति ने मेरे स्वभाव को बदलने के साथ-साथ मुझे यह भी अनुभव कराया कि वर्णन के स्तर पर तो दैहिक नातों में रूहानियत आ गई परन्तु मान-अपमान की फीलिंग आने का कारण है कि संस्कारों में अभी तक दैहिक नातों का भान पूरा भस्म नहीं हुआ है। ईश्वरीय नियमों की धारणा होने पर भी यदि कोई विकार सूक्ष्म रूप में भी अन्दर बैठा है तो इस मरजीवा जन्म में निर्विघ्न आगे बढ़ने में बाधा बन सकता है। इसलिए विकारों के सूक्ष्म रूपों को भी चेक करें और समाप्त करें। ❖

योगबल अर्थात् परमात्मा पिता से प्राप्त शक्तियों का प्रवाह

❍ ब्रह्माकुमारी ज्यामिति माहेश्वरी, कोटा

यह सोचना और समझना बहुत कठिन है कि भगवान को याद करने से पाप मिट जाते हैं। यदि मैंने किसी को दुख दिया तो उसका बोझ परमात्मा को याद करने से कैसे हट सकता है, यह एक बहुत ही महीन प्रक्रिया है, आइए इसे समझें।

परमात्मा पिता को हम सर्व शक्तियों का स्रोत कहते हैं। प्रकृति में हम यह व्यवस्था देखते हैं कि हवा ज्यादा दबाव वाले क्षेत्र से कम दबाव वाले क्षेत्र की ओर बहती है, गर्मी (गर्म ऊर्जा) ज्यादा तापमान से कम तापमान की ओर बहती है, ठोस पदार्थ में हाई वॉल्टेज से लो वॉल्टेज की तरफ इलेक्ट्रॉन्स बहते हैं, उसी प्रकार सर्वशक्तिमान से नाता जोड़ने पर शक्तियों का प्रवाह हमारी ओर होने लगता है। इस प्रकार परमात्मा पिता को याद करते रहने से हम बुराई को जीतने के काबिल हो जाते हैं और भविष्य में पाप करने से बच जाते हैं। पर सवाल यह है, परमात्मा की याद से पाप कैसे भस्म हो जाते हैं?

ब्रह्मा बाबा ने अपने अनुभव में सुनाया कि जब शरीर छूटने वाला था तब कर्मभोग और कर्मयोग में लड़ाई चल रही थी। कर्मभोग का होना अर्थात् हिसाब-किताब बाकी होना। कर्मभोग बाबा को दर्द का एहसास कराना चाहता था परन्तु बाबा ने अपने को शरीर से न्यारी आत्मा इस कदर निश्चित कर लिया था कि शरीर में होने वाले भयंकर दर्द की अनुभूति आत्मा को छू नहीं पा रही थी। बाबा अपनी मूलावस्था में स्थित थे। आत्मा की मूलावस्था होती है आनंद स्वरूप। बाबा को निश्चय था कि वे आनंद स्वरूप हैं। जिस प्रकार यदि अंधेरा है तो प्रकाश नहीं और प्रकाश है तो अंधेरा नहीं, उसी प्रकार आनंद है तो दर्द नहीं और दर्द है तो आनंद नहीं। इस प्रकार ब्रह्मा बाबा शरीर के हिसाब-किताब से अछूते रहे परन्तु उनकी ऐसी शक्तिशाली अवस्था बनी कैसे? शिव बाबा की याद से अर्थात् योगबल

से। इससे यह सिद्ध होता है कि बाबा को याद करने से, अशरीरी बनने से हमें कष्ट का अहसास नहीं होता है।

कर्म-अकर्म की गुह्य गति की दृष्टि से भी यह बात सिद्ध की जा सकती है। जब हमने किसी को दुख दिया तो हमें बद्दुआ मिली या यों कहें कि माइनस (-) मार्क्स मिले। उसके बाद औरों को सुख दिया तो प्लस (+) मार्क्स मिले परन्तु एक आत्मा के दिए गए माइनस मार्क्स दूसरी आत्मा के दिए प्लस मार्क्स से खत्म नहीं हो सकते। यह है आत्माओं की बात पर परमात्मा पर यह नियम लागू नहीं होता। उनकी दुआएँ तो सर्वोपरि हैं। उनके आशीर्वाद में इतनी ताकत है कि वो किसी भी बद्दुआ से लड़ जाए। जब हम बाबा को याद करते हैं तो स्वत: ही उनकी दुआओं के भागीदार बन जाते हैं क्योंकि वो हैं ही दुआओं को लुटाने वाले, इस प्रकार हमारे माइनस मार्क्स खत्म होते जाते हैं।

हाँ, यह जरूर है कि भगवान की दुआएँ भले ही सर्वोपरि हैं पर संगमयुग में भगवान का साथ पाने के लिए मनुष्य आत्माओं की दुआओं की भी जरूरत है क्योंकि जिसे जनता पसंद करे और जो लायक हो, भगवान भी तो उसे ही सृष्टि के रंगमंच पर राजा बनने की अनुमति देंगे और उसी से स्वर्ग का राज्यभार संभलवाएँगे। ❖

मृत्यु से निर्भय बनें

❍ ब्रह्माकुमार ताराचंद, पाल्हावास (रेवाड़ी)

संसार में आवागमन का चक्र चलता रहता है, कोई जन्म लेता है, कोई मरता है। सभी मनुष्य जीना चाहते हैं लेकिन भला मौत से कोई बच सकता है? काल (मौत) के मुख में मनुष्य सदा रहता है, कोई आज जाता है, कोई कल जाता है, हरेक का जाना निश्चित है। यही प्रकृति का नियम है। मौत कर्मों के अनुसार होती है। मौत का समय नहीं है, न ही मौत कहकर आती है। किसी की मृत्यु वानप्रस्थ में होती है, किसी की यौवन में, किसी की बचपन में, किसी की दो वर्ष बीतने पर तो किसी की छः मास में, कोई जन्मते ही मर जाते हैं और कोई जन्म लेने से पहले गर्भ में ही खत्म हो जाते हैं। जब से मनुष्य जन्म लेता है, मौत भी निश्चित हो जाती है। मौत को न कभी खुशी होती है और न ही गम। हाँ, जब भी किसी की मौत होती है तब चारों तरफ सन्नाटा-सा छा जाता है, लोग चिन्तित और उदास नजर आते हैं। मौत स्वावलम्बी है और अपना फैसला खुद लेती है।

बहुत-से मनुष्य कहते हैं कि मौत को बहाना चाहिए लेकिन मौत कई निम्न कारणों से भी होती है –

प्राकृतिक आपदाएँ - अचानक भूकम्प, तूफान, बाढ़ आ जाना, सूखा (अकाल) पड़ जाना व आग लग जाना आदि से भी मौत होती है।

बीमारियाँ - बहुत-से मनुष्यों की कैंसर, हृदय रोग, श्वास रोग आदि बीमारियों के द्वारा मौत होती है।

दुर्घटनाएँ - बहुत-से मनुष्यों की दुर्घटनाओं द्वारा मौत हो जाती है जैसे – वायुयान का क्रैश हो जाना, जलपोतों का डूब जाना या टक्कर हो जाना, रेलों की टक्कर हो जाना या फिर रेल पटरी से उतर जाना, वाहनों की आपस में टक्कर हो जाना या नदी-नालों में गिर जाना। मनुष्य नदियों या डैम में डूब कर भी मौत के शिकार हो जाते हैं।

खुदकुशी (आत्महत्या) - मनुष्यों द्वारा जहरीली गोलियों का इस्तेमाल करना, फाँसी लगाकर मरना, शरीर पर आग लगाकर मरना, यह मौत का बुलावा है यानि खुद को मौत के मुँह में डालना है।

हत्या - एक-दूसरे को मार देना (Murder) भी मौत का कारण है।

देशों के आपसी युद्ध या गृहयुद्ध (आतंकवाद) द्वारा भी बहुत ज्यादा मौतें होती रहती हैं।

रथी के चले जाने पर अर्थी रह जाती है

मौत की बात सुनकर मनुष्यों के तरह-तरह के विचार चलते हैं और वे भय, चिन्ता में रहते हैं। मौत कभी लौटकर नहीं आती है। मौत पंच तत्वों से बने शरीर की होती है, शरीर को चलाने वाली आत्मा की नहीं। मौत के समय लोग कहते हैं कि प्राण निकल गये, स्वर्ग पधारा, हंस उड़ गया, हवा निकल गई, प्रभु का प्यारा हो गया, शरीर त्याग दिया, इतने ही दिनों का मेहमान था आदि-आदि। मनुष्य के रथ (शरीर) से रथी (आत्मा) निकल जाती है तो केवल अर्थी ही रह जाती है जिसे जला दिया जाता है। पंचतत्वों से बना शरीर यहीं पर ही नष्ट हो जाता है। पार्ट बजाने वाली आत्मा इस शरीर को छोड़कर, कर्मों के आधार पर दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। आत्मा न कभी मरती है, न ही इसे काल खाता है और न ही इसे नष्ट किया जा सकता है।

कर्मों के आधार पर मिलता है शरीर

आत्मा, परमपिता परमात्मा की अविनाशी सन्तान है जो अति सूक्ष्म ज्योतिबिन्दु स्वरूप है। यह शरीर के अन्दर एक ऐसी सत्ता है जो प्रकृति, शरीर, समय और भौतिक सीमाओं से परे है। भारत के धार्मिक शास्त्र श्रीमद्भगवत गीता में भी लिखा है – वांसासि जीर्णानि यथा विहाय........जीर्णान्यन्यानि संयाति न नवानि देही।। जैसे सर्प पुरानी खाल को छोड़ नई खाल धारण करता है या

मनुष्य पुराने वस्त्र को त्यागकर नये वस्त्र धारण करता है वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करती है। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है। कर्मों के आधार पर ही आत्मा के नये शरीर का निर्माण होता है। आत्मा शरीर छोड़ते समय सूक्ष्म शरीर में प्रवेश कर लेती है। कुछ समय तक सूक्ष्म शरीर में रहकर, नये शरीर में प्रवेश कर लेती है और पुन: इस संसार में प्रकट होती है।

हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझकर चलें

मनुष्य को मौत से डरना नहीं चाहिए और न ही इसकी चिन्ता करनी चाहिए। याद रखना है कि जो संसार में आया है, उसे वापिस जाना ही है। इस पर मातेश्वरी (मम्मा) के महावाक्य याद आते हैं कि मनुष्य को हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझकर चलना चाहिए और परमात्मा को याद करते हुए अच्छे कर्म करते रहना चाहिए। हमें याद रखना चाहिए कि 'मैं एक ज्योतिबिन्दु आत्मा हूँ, परमपिता परमात्मा की अविनाशी सन्तान हूँ, इस मनुष्य सृष्टि रंगमंच पर अनेक नाम, रूप, देश, पद लेकर पार्ट अदा करने आयी हूँ। मौत तो एक जैविक परिवर्तन है जो सृष्टि का नियम है। मृत्यु केवल शरीर को ही नष्ट करती है, शरीर में रहने वाली आत्मा को नष्ट नहीं कर सकती है। मौत पर विजय कैसे पायें? इस नि:शुल्क ज्ञान को प्राप्त करने हेतु आप निकटतम ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर सम्पर्क कर सकते हैं। इसके लिए देर नहीं करनी चाहिए क्योंकि सब कुछ जीवन में अचानक होता है।

❖

बैज ने बचाया बदमाशों से

ब्रह्माकुमार नवल किशोर, डाकपत्थर (उत्तराखंड)

एक बार रात को नौ बजे ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र से घर लौटते समय बदमाशों ने मुझे साइकिल से उतार कर घेर लिया। उसी समय एक बदमाश की नजर मेरे बैज पर पड़ी। उसने पूछा, आप ओमशान्ति भाई हैं? मैंने कहा, हाँ, आप बाबा को पहचानते हैं क्या? उसने मेरी बात का तो उत्तर नहीं दिया पर अपने साथी को कहा, इस ओमशान्ति भाई को छोड़ दो। फिर मुझे कहा, इतनी रात में इस रास्ते से मत जाया करो। तब से मुझे बाबा के ऊपर सम्पूर्ण निश्चय हो गया कि जिसको राखे बाबा, मार सके न कोए। फिर मैंने साइकिल से देर रात जाना छोड़ दिया और बस से जाना प्रारम्भ किया।

कुछ दिनों बाद रात नौ बजे आश्रम से लौटते समय, बस सेवा बन्द होने के कारण, रास्ते पर खड़ा होकर किसी साधन का इन्तजार करने लगा। तभी देखा, जान-पहचान वाले एक भाई स्कूटर लेकर आ रहे थे, उन्होंने मुझे बैठा लिया। कुछ दूर चलने के बाद अचानक स्कूटर, ट्रैक्टर से धक्का खा गया। मैं छिटकते हुए खेती में गिर गया और बेहोश हो गया। जब होश आया तो देखा कि खेत में पड़ा हूँ और सिर से खून बह रहा है। सड़क पर आकर उस स्कूटर वाले भाई को देखा, वे शरीर छोड़ चुके थे। मेरे मुँह से निकल पड़ा, बाबा, यह क्या हो गया? बाबा की लाल किरणें मुझ पर पड़ रही थीं। बाबा को याद करके, हिम्मत और साहस के साथ किसी भाई के साथ पुलिस थाने में पहुँचा और रिपोर्ट लिखवायी, फिर दरोगा के साथ घटनास्थल पर आया। दरोगा जी ने पूरी तहकीकात लेने के बाद मुझे सावधान किया कि अचानक किसी के स्कूटर या गाड़ी में कभी नहीं बैठना, मरा हुआ व्यक्ति शराब पीकर चला रहा था। आप ब्रह्माकुमारी वाले हो, आप लोग जहाँ तक हो गलती नहीं करते हो, फिर भी आगे ऐसी घटना न हो, इसका ख्याल जरूर रखना। मुझे अस्पताल में भर्ती कराया गया और चिकित्सा पूर्ण होने के बाद घर भेजा गया। इस प्रकार बाबा ने एक बार फिर रक्षा की। अब तो दृढ़ निश्चय है, बाबा मेरा और मैं बाबा का हूँ। ❖

भारत के प्राचीन ग्रंथों में संविधान संबंधी बातों की जानकारी

❍ ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

शिवबाबा के ज्ञान के अनुसार सतयुगी सृष्टि की शुरूआत से ही श्री लक्ष्मी-श्री नारायण विश्व महाराजा-विश्व महारानी के रूप में कार्य करते हैं और उसी वंश परम्परा का राज्य कारोबार बाद में अन्य विश्व महाराजा-विश्व महारानी द्वारा होता रहता है। इस बात का सबूत हमें मनुस्मृति से मिलता है जिसके पहले अध्याय में लिखा है कि परमात्मा (सुवर्णगर्भ) ने सृष्टि रची और उसका कारोबार करने के लिए श्री नारायण के हाथ में राज्य कारोबार दिया। सतोप्रधान राज्य कारोबार होने के कारण उस समय संविधान की जरूरत नहीं थी परंतु राज्यप्रणाली की बातें धीरे-धीरे पक्की होती गईं। यह भी हम जानते हैं कि श्रीकृष्ण ही श्री नारायण बनकर विश्व के पहले विश्व महाराजा बनते हैं। परंतु शास्त्रों में श्रीराम पहले और बाद में श्रीकृष्ण हैं। इन बातों की गहराई में जाना इस लेख की मर्यादा के बाहर है। भारत के प्राचीन ग्रंथों में संविधान की नहीं अपितु राजशाही के द्वारा राज्यकारोबार की बातें लिखी हैं।

भारत के प्राचीन ग्रंथो में इक्ष्वाकु वंश की बातें आती हैं और इस वंश की बातें गीता के चौथे अध्याय में भी आती हैं। उस वंश की बात करें तो उस समय जो राजा था उनका नाम दिलीप था। राजा दिलीप को संतान नहीं हो रही थी इसलिए राजा ने ऋषि वशिष्ठ से कहा कि उन्हें संतान प्राप्ति का कोई उपाय बतायें। तब ऋषि वशिष्ठ ने कहा कि मेरे पास कामधेनु गाय है, आप अगर उसकी सेवा करेंगे और अगर वह आप पर प्रसन्न हो जायेगी तो आपको अवश्य संतान प्राप्ति होगी। इसलिए राजा दिलीप ने अपने मंत्री को राज्यकारोबार सौंप दिया और खुद कामधेनु की सेवा करने ऋषि वशिष्ठ के आश्रम पर चले गये। राजा दिलीप की अनुपस्थिति में उनके मंत्री और कोषाध्यक्ष (खजांची) ने मिलकर राज्य कारोबार किया। तत्पश्चात् दिलीप राजा का पुत्र अज राजा और उसके बाद उनका पुत्र रघु राजा बना, जिसके लिए गाया जाता है - रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जायें पर वचन न जायें...। राजा रघु के राज्य में बहुत ही विचित्र अर्थशास्त्र चलता था कि जिस भी साहूकार के पास अधिक धन होता था वह राजा के भण्डारे में डाल देता था और जब जरूरत पड़ती थी तब धन निकाल लेता था। इस प्रकार विनिमय पद्धति चलती थी। उस जमाने में कर प्रणाली नहीं होती थी। शास्त्रों में लिखा है कि एक बार किसानों और साहूकारों ने राजा के खज़ाने से इतना धन ले लिया कि राजा का खज़ाना खाली हो गया परंतु राजा ने कोई कार्यवाही नहीं की। फिर राजा ने कुबेर को संदेश भेजा कि उसे राज्य चलाने के लिए धन की आवश्यकता है (कुबेर पहले लंकाधिपति था और बहुत धनवान था। उस समय उसके पास पुष्पक विमान भी था परंतु बाद में उसके छोटे भाई रावण ने शिव आराधना की और अनेक वरदान प्राप्त किये जिससे वो शक्तिशाली बन गया और उसने अपने भाई कुबेर को अपने राज्य से निष्कासित कर दिया)। कुबेर ने राजा रघु की बात मानी और उसे धन दिया। इस प्रकार उस जमाने में राजा के भण्डारे से जनता ज्यादा धन लेकर जाती थी तो भी राजा कुछ नहीं कहता था, इस प्रकार का उस समय राज्य कारोबार चलता था।

शायद राजा रघु या उससे भी पहले से ही अश्वमेध यज्ञ की शुरूआत हुई। अश्वमेध यज्ञ राजा अपने साम्राज्य विस्तार के लिए किया करते थे। अश्वमेध यज्ञ में राजा अपने अश्व को छोड़ देता था और वह अश्व जहाँ-जहाँ पहुंचता था वहाँ के राजा या तो समर्पण कर देते थे या फिर घोड़े को पकड़ लेते थे और युद्ध करते थे। घोड़े के वापिस लौटने पर राजा अश्वमेध यज्ञ करता था। अश्वमेध यज्ञ के

बाद राजा मंत्री को कहता था कि वह अपनी मनमत से जिसे चाहे उसे दंड नहीं दे सकता है और फिर मंत्री राजगुरु से पूछता था कि राजा जो बात कह रहा है क्या वह सही है? फिर राजगुरु धर्म का डण्डा लेकर राजा के सिर के ऊपर रखता था और कहता था कि आपके ऊपर धर्म है, आप धर्म से ऊपर नहीं हो सकते। इसलिए आप धर्मानुसार अपना राज्य कारोबार चलाओ। इस प्रकार उस जमाने में धर्मग्रंथ राज्य कारोबार करने के लिए मुख्य संदर्भ ग्रंथ के रूप में उपयोग में लाये जाते थे। धर्मग्रंथ एक प्रकार से संविधान के रूप में ही उपयोग में लाया जाता था।

उसके बाद राजा रघु का पुत्र दशरथ राजा बना और हम सब जानते हैं कि राजा दशरथ के राज्य में कैसे रानी कैकेयी ने अपने दो वरदान राजा दशरथ से मांगे जिसके फलस्वरूप श्रीराम, सीता एवं लक्ष्मण को 14 वर्ष का वनवास मिला और भरत को राजगद्दी मिली। जब श्रीराम को वनवास के लिए जाना था तब राजा दशरथ के मंत्री सुमंत श्रीराम व अन्य को सरयु नदी के किनारे तक विदाई देने गये और आकर राजा दशरथ को बताया कि वह उन्हें सरयु नदी के किनारे तक छोड़कर आये हैं। ऐसे ही मंत्री द्वारा कार्य करने की दूसरी बात रामायण में यह है कि जिस समय सीता गर्भवती थी और उसे राजा श्रीराम ने एक धोबी के कहने पर वनवास भेज दिया था। तब भी मंत्री सुमंत सीता को अपने राज्य की हद तक छोड़कर आये और आकर उन्होंने राजा राम को बताया कि वह सीता को अपने राज्य की हद तक छोड़कर आये हैं और आगे सीता का भाग्य उसे जहां भी ले जाये। परंतु दूसरी रामायण में यह कहा गया है कि सुमंत मंत्री के साथ लक्ष्मण भी सीता को विदाई देने गया था और उन्होंने उसे एक ऋषि के आश्रम में छोड़ दिया था। परंतु यह बात सुसंगत नहीं लगती क्योंकि सीता जब अपने दोनों बेटों को लेकर राजा राम के दरबार में आती है तब राजा राम उसे अपनाने के लिए तैयार नहीं होते। फिर जब श्रीराम अश्वमेध यज्ञ करते हैं तो लव-कुश घोड़े को पकड़ लेते हैं और फिर पहले मंत्री फिर शत्रुघ्न, भरत, लक्ष्मण को क्रमश: युद्ध में पराजित करते हैं और बाद में श्रीराम वहाँ पर जाते हैं।

जैसे उस समय राज्य का विस्तार करने हेतु अश्वमेध यज्ञ किया जाता था एवं मंत्री सुमंत श्रीराम, सीता एवं लक्ष्मण को सरयु नदी के किनारे तक या सीता को राज्य की हद तक छोड़ने गये थे, इस बात से सिद्ध होता है कि उस समय भी राज्य की हदें (boundaries) होती थीं। रामायण सीरियल जो दूरदर्शन पर दिखाया गया था उसमें एक प्रसंग में दिखाया गया कि सीता भूखी, प्यासी, थकी हुई जा रही थी और जाते-जाते वह मूर्च्छित होकर गिर गई। फिर वहां से गुजर रहे कुछ साधुओं ने सीता को देखा और उस पर पानी के छींटे डालकर उसे सुरजीत किया और अपने साथ आश्रम पर लेकर गये। इस प्रकार उस समय भी सभी अपने-अपने राज्य की सीमाओं में ही रहते थे जिससे कि औरों को कोई परेशानी ना हो। यह भी जैसे संविधान का ही एक रूप था।

महाभारत में संविधान इतने स्पष्ट रूप से नहीं था क्योंकि उसमें हर बात में श्रीकृष्ण को आगे रखा गया और श्रीकृष्ण ने धर्म का शासन स्थापित करने के लिए अवतार धारण किया। जब श्रीकृष्ण का बेटा अनिरुद्ध राजा बाणासुर की बेटी उषा के पास गया था तब श्रीकृष्ण और बाणासुर का युद्ध चल रहा था और उसी समय दुर्योधन ने पाण्डवों को द्युत खेलने के लिए बुलाया था जिसमें पाण्डव हार गये और परिणामरूप पाण्डवों को 12 वर्ष का वनवास व 1 वर्ष का अज्ञातवास मिला। तब श्रीकृष्ण ने कहा कि मेरा युगधर्म का कारोबार 13 वर्ष बढ़ गया। फिर श्रीकृष्ण 13 वर्ष के बाद जब सुलह करने दुर्योधन के पास गये तब दुर्योधन ने कहा कि मैं पाँच गांव तो क्या परंतु सूई की नोक जितनी भी जगह पाण्डवों को नहीं दूंगा और परिणामरूप महाभारत का युद्ध हुआ। महाभारत युद्ध के मैदान में श्रीकृष्ण अर्जुन को गीता का ज्ञान देते हैं। यह गीता-ज्ञान श्रेष्ठ राज्य कारोबार चलाने के लिए दिया गया। केवल धर्म के आधार पर अगर राज्य कारोबार होता तो ऋषियों के

हाथ में ही राज्य कारोबार होता परंतु राज्य कारोबार तो क्षत्रियों के हाथ में होता था इसलिए गीता ज्ञान देना जरूरी था। इस प्रकार देखा जाये तो पौराणिक ग्रंथों में राज्य कारोबार सुचारु रूप से चल सके, ये सभी बातें विभिन्न कथाओं के माध्यम से दी गई हैं।

इस प्रकार हमने देखा कि सृष्टि के आदि से राज्य कारोबार और धर्म साथ-साथ चलते थे और उसी कारण उस समय की व्यवस्था सतोप्रधान थी। बाबा ने हमें बताया है कि उस समय समाज की रचना और समाज में रहने वाले व्यक्तियों का जीवन व्यवहार व राजाओं का राज्य कारोबार किस प्रकार हो, उसके बारे में अनेक धर्मग्रंथ लिखे गये थे जिनमें मुख्य दो ग्रंथ हैं - 1) मनुस्मृति व 2) याज्ञवल्क स्मृति। मनुस्मृति में राजा का प्रजा के साथ व्यवहार कैसे हो उसके बारे में लिखा गया है। मानव जीवन के चार आश्रमों के बारे में बताया गया है - 1) ब्रह्मचर्य, 2) गृहस्थाश्रम, 3) वानप्रस्थ और 4) संन्यास। अगर कोई व्यक्ति गृहस्थाश्रम व वानप्रस्थाश्रम में नहीं जाना चाहता और सीधे ही संन्यास लेना चाहता है तो वह भी ले सकता है। संन्यासाश्रम ऋषि-मुनि के आधार पर चलता था। कई ऋषि तो गृहस्थी थे जैसे कि वशिष्ठ-अरूंधती। परंतु बाद में जब शंकराचार्य आये तो उन्होंने संन्यास धर्म को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए गृहस्थाश्रम में रहने वाले मण्डन मिश्र के साथ वाद-विवाद किया जिसमें उन्होंने मण्डन मिश्र की पत्नी भारती को न्यायाधीश के रूप में रखा। इस वाद-विवाद में शंकराचार्य की विजय हुई परिणामस्वरूप मण्डन मिश्र को गृहस्थ धर्म का त्याग कर सम्पूर्ण संन्यास धारण करना पड़ा। हिंदू लॉ के अनुसार मिताक्षरा व दायभाग पद्धति मनुस्मृति व याज्ञवल्क स्मृति से ही निकली हुई विचारधारायें हैं। मनुस्मृति और याज्ञवल्क स्मृति इन दोनों ग्रंथों द्वारा कारोबार के जो नियम बने हैं वे आज तक भी हिंदू धर्म में लागू हैं। मनुस्मृति में मिताक्षरा के मुताबिक बच्चों को जन्म से ही अपने दादा की संपत्ति में समान अधिकार मिलता है और आज भी भारत सरकार के उत्तराधिकार अधिनियम (Indian Succession Act) में यह नियम चालू है। सिर्फ बंगाल में दायभाग पद्धति अपनायी जाती है जिसके अनुसार जब तक पिता जीवित हैं तब तक बेटे को अपने दादा की संपत्ति में अधिकार नहीं मिलता। पिता की मृत्यु के पश्चात् ही पौत्र को उसके दादा की सम्पत्ति में अधिकार मिलता है। अन्य ग्रंथों में यम और यमी के संवाद में लिखा है कि माता-पिता और बच्चों के बीच का संबंध, भाई-भाई के बीच का संबंध और भाई-बहनों के बीच का संबंध कैसा हो। इनके अलावा उपनिषद् आदि भी हैं जिनके आधार पर कानून व्यवस्था सुचारु रूप से चलती थी। बाद में राज्य कारोबार करने वाले जो सतोप्रधान थे वे सतो, रजो व तमो में आये। उसके बाद राज्य कारोबार की व्यवस्था कैसे चलायें, इसके बारे में लिखत में नियम लिखना शुरू हुआ जिसमें सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं चाणक्य जिन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य को गद्दी पर प्रस्थापित किया और सारे भारत में एक राज्य स्थापन किया। इस प्रकार तत्कालीन समय में राज्यव्यवस्था चलाने के नियम संविधान के रूप में लिखत नहीं थे परंतु धर्मग्रंथों में ही इसके बारे में लिखा गया था और उसी अनुसार राज्य कारोबार चलता था। प्राचीन ग्रंथों में और भी कई बातें लिखी हुई हैं परंतु अगर मैं उसका संदर्भ यहाँ लिखूँ तो वह इस लेख की मर्यादा के बाहर जायेगा। अगले लेख में संविधान का कारोबार विदेश में कैसे शुरू हुआ और फिर बाद में भारत में कैसे शुरू हुआ, इसके बारे में चर्चा करेंगे। ❖

(यह लेख लेखक के अपने विचारों पर आधारित है
– सम्पादक)

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1.सुखड़ा (नेपाल)- छिन्नमस्ता शक्तिपीठ के पीठाधीश श्री श्री 1008 महाकान्त ठाकुर जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रन्जू बहन। **2.फरीदाबाद-** हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहरलाल खट्टर का स्वागत करते हुए ब्र.कु.कौशल्या बहन। **3.शिमला-** हि.प्र.के मुख्यमंत्री भ्राता वीरभद्र सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.भगवान भाई, ब्र.कु.सुनिता बहन तथा ब्र.कु.यशपाल भाई। **4.उदयपुर-** राजस्थान के गृहमन्त्री भ्राता गुलाबचन्द कटारिया को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शीलू बहन। **5.मुधेपरा(बिहार)-** भूपेन्द्र नारायण विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. जयप्रकाश नारायण को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रन्जू बहन। **6.दयालचक (जम्मू-कश्मीर)-** जम्मू-कश्मीर के उप-मुख्यमन्त्री डॉ.निर्मल सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सोनिका बहन। **7.उज्जैन-** कुम्भ मेले में ब्रह्माकुमारीज पण्डाल का अवलोकन स्वामी शिवोहम् भारती महाराज को करवाती हुई ब्र.कु.सरिता बहन। **8.कूचबेहर (गुन्जाबाड़ी)-** भाजपा के स्पोक्समैन भ्राता शाहनवाज हुसैन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सम्पा बहन। **9.छिन्नमस्ता-** नेपाल के सिंचाई मन्त्री भ्राता उमेशकुमार यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रेणु बहन। **10.नाभा-** पंजाब विधानसभा अध्यक्ष भ्राता चरणजीत सिंह अटवाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.बृज बहन, ब्र.कु.गुलशन बहन तथा अन्य। **11.सानोर (पटियाला)-** बाल सुरक्षा अधिकार राज्य आयोग के सदस्य डॉ.यशपाल खन्ना को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.शान्ता बहन, ब्र.कु.योगिनी बहन, ब्र.कु.जगदेव भाई उनके साथ।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : June, 2016.

उज्जैन-
सिंहस्थ में आयोजित ब्रह्माकुमारीज के 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' मेले का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, परमार्थ निकेतन आश्रम, ऋषिकेश के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती जी, म.प्र.के शिक्षा राज्यमंत्री भ्राता पारस जैन, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु.मुन्नी बहन, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई तथा अन्य।

नारायणगढ़(नेपाल)-
नेपाल की राष्ट्रपति महामहिम बहन विद्यादेवी भण्डारी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.लक्ष्मी बहन।

इन्दौर (ओम शांति भवन)-
'परमात्म ज्ञान द्वारा विश्व परिवर्तन' विषयक कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए झारखण्ड की राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुर्मू, ब्र.कु.हेमलता बहन, इन्दौर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष भ्राता शंकर लालवानी, समाजसेवी डॉ.अनिल भंडारी, ब्र.कु.नथमल भाई तथा अन्य।

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-
कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, ब्र.कु.करुणा भाई, ब्र.कु.कुसुम बहन, संत रविदास हस्तशिल्प और हथकरघा कार्पोरेशन के अध्यक्ष भ्राता नारायण प्रसाद कबीरपंथी, ब्र.कु.नेहा बहन, राजा मानसिंह तोमर संगीत और कला विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर डॉ.स्वतंत्र शर्मा तथा अन्य।